SAMPLE

# ऊँ गं गणपतये नमः

जन्मपत्रिका

# SAMPLE

**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# SAMPLE

Model: C2,Z1Z2Z3,JJL2

SrNo: 101-101-102-1040 / 6604 Date: 29/01/2026

| | | | |
|---|---|---|---|
| लिंग | पुल्लिंग | दादा का नाम | |
| **जन्म तिथि** | **02/02/1975** | पिता का नाम | |
| दिन | रविवार | माता का नाम | |
| **जन्म समय** | **07:15:00 घंटे** | जाति | |
| इष्ट | 00:03:42 घटी | गोत्र | |
| **स्थान** | **Jaipur** | | |
| राज्य | Rajasthan | चैत्रादि संवत शक | 2031 / 1896 |
| देश | India | माह | माघ |
| | | पक्ष | कृष्ण |
| अक्षांश | 26:53:00 उत्तर | सूर्योदय कालीन तिथि | 7 |
| रेखांश | 75:50:00 पूर्व | तिथि समाप्ति काल | 00:14:56 |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व | जन्म तिथि | 7 |
| स्थानिक संस्कार | -00:26:40 घंटे | सूर्योदय कालीन नक्षत्र | चित्रा |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे | नक्षत्र समाप्ति काल | 11:41:53 घंटे |
| स्थानिक समय | 06:48:20 घंटे | जन्म नक्षत्र | चित्रा |
| वेलान्तर | -00:13:43 घंटे | सूर्योदय कालीन योग | शूल |
| साम्पातिक काल | 15:34:52 घंटे | योग समाप्ति काल | 18:21:55 घंटे |
| सूर्योदय | 07:13:31 घंटे | जन्म योग | शूल |
| सूर्यास्त | 18:07:23 घंटे | सूर्योदय कालीन करण | विष्टि |
| दिनमान | 10:53:52 घंटे | करण समाप्ति काल | 12:48:34 घंटे |
| सूर्य स्थिति(अयन) | उत्तरायण | जन्म करण | विष्टि |
| सूर्य स्थिति(गोल) | दक्षिण | भयात | 46:14:41 |
| ऋतु | शिशिर | भभोग | 57:21:53 |
| सूर्य के अंश | 19:04:01 मकर | भोग्य दशा काल | मंग 1 वर्ष 4 मा 2 दि |

| **अवकहड़ा चक्र** | | **घात चक्र** | |
|---|---|---|---|
| लग्न–लग्नाधिपति | मकर – शनि | मास | माघ |
| **राशि–स्वामी** | **तुला – शुक्र** | तिथि | 4-9-14 |
| **नक्षत्र–चरण** | **चित्रा – 4** | दिन | गुरुवार |
| नक्षत्र स्वामी | मंगल | नक्षत्र | शतभिषा |
| योग | शूल | योग | शुक्ल |
| करण | विष्टि | करण | तैतिल |
| गण | राक्षस | प्रहर | 4 |
| योनि | व्याघ्र | वर्ग | सिंह |
| नाड़ी | मध्य | लग्न | कन्या |
| वर्ण | शूद्र | सूर्य | कन्या |
| वश्य | मानव | चन्द्र | धनु |
| वर्ग | मृग | मंगल | तुला |
| युँजा | मध्य | बुध | कर्क |
| हंसक | वायु | गुरु | वृश्चिक |
| जन्म नामाक्षर | री–रीतेश | शुक्र | धनु |
| पाया(राशि–नक्षत्र) | ताम्र – लौह | शनि | सिंह |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | कुम्भ | राहु | मकर |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | मक | 18:45:42 | 426:41:04 | श्रवण | 3 | 22 | शनि | चंद्र | बुध | ––– |
| सूर्य | | | मक | 19:04:01 | 01:00:53 | श्रवण | 3 | 22 | शनि | चंद्र | बुध | शत्रु राशि |
| चंद्र | | | तुला | 04:06:52 | 13:48:44 | चित्रा | 4 | 14 | शुक्र | मंग | शुक्र | सम राशि |
| मंग | | | धनु | 14:46:02 | 00:44:14 | पूर्वाषाढ़ा | 1 | 20 | गुरु | शुक्र | शुक्र | मित्र राशि |
| बुध | व | | कुंभ | 01:16:56 | 00:29:19 | धनिष्ठा | 3 | 23 | शनि | मंग | बुध | सम राशि |
| गुरु | | | कुंभ | 26:03:26 | 00:13:03 | पू0भाद्रपद | 2 | 25 | शनि | गुरु | केतु | सम राशि |
| शुक्र | | | कुंभ | 10:00:06 | 01:14:47 | शतभिषा | 2 | 24 | शनि | राहु | गुरु | मित्र राशि |
| शनि | व | | मिथु | 19:51:29 | 00:03:59 | आर्द्रा | 4 | 6 | बुध | राहु | मंग | मित्र राशि |
| राहु | व | | वृश्चि | 13:23:04 | 00:03:11 | अनुराधा | 4 | 17 | मंग | शनि | राहु | शत्रु राशि |
| केतु | व | | वृष | 13:23:04 | 00:03:11 | रोहिणी | 2 | 4 | शुक्र | चंद्र | राहु | सम राशि |
| हर्ष | | | तुला | 08:57:13 | 00:00:13 | स्वाति | 1 | 15 | शुक्र | राहु | गुरु | ––– |
| नेप | | | वृश्चि | 17:49:48 | 00:01:19 | ज्येष्ठा | 1 | 18 | मंग | बुध | बुध | ––– |
| प्लू | व | | कन्या | 15:36:44 | 00:00:43 | हस्त | 2 | 13 | बुध | चंद्र | गुरु | ––– |
| दशम भाव | | | वृश्चि | 02:31:57 | -- | विशाखा | -- | 16 | मंग | गुरु | राहु | -- |

व – वक्री  स – स्थिर

अ – अस्त  पू – पूर्ण अस्त

राहु : माध्य

**चित्रपक्षीय अयनांश : 23:30:50**

## लग्न–चलित

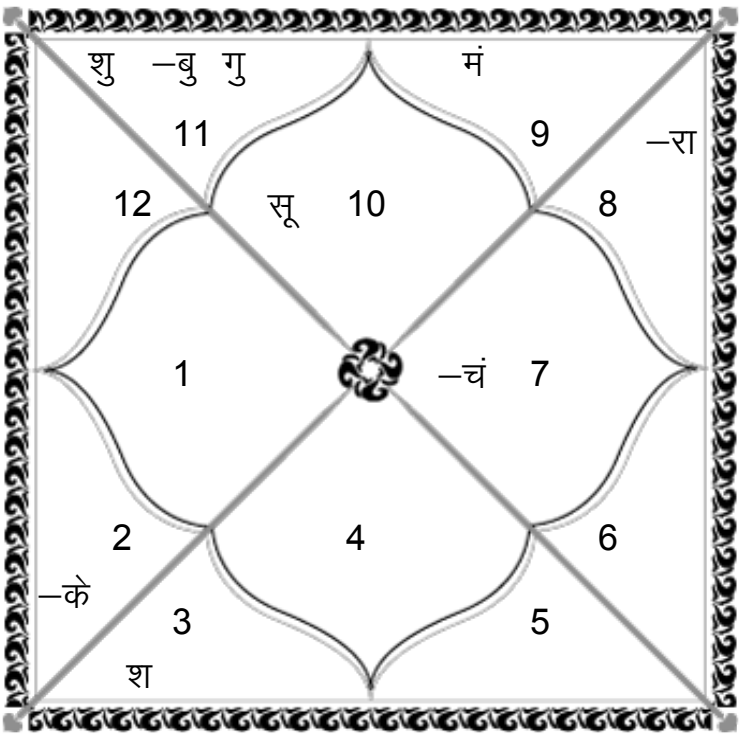


## चन्द्र कुंडली

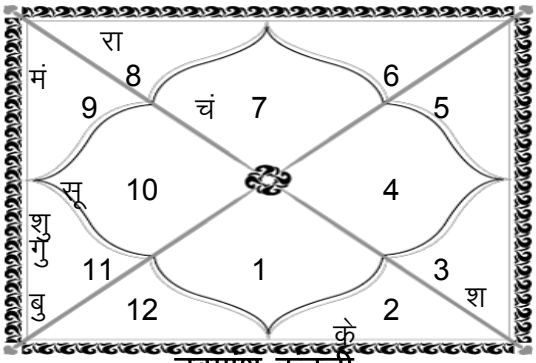


## नवमांश कुंडली

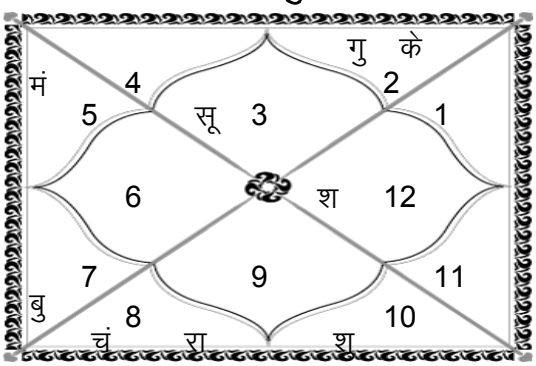




**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com  astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | मकर | 06:03:24 | मकर | 18:45:42 |
| 2 | कुम्भ | 06:03:24 | कुम्भ | 23:21:07 |
| 3 | मीन | 10:38:50 | मीन | 27:56:32 |
| 4 | मेष | 15:14:15 | वृष | 02:31:57 |
| 5 | वृष | 15:14:15 | वृष | 27:56:32 |
| 6 | मिथुन | 10:38:50 | मिथुन | 23:21:07 |
| 7 | कर्क | 06:03:24 | कर्क | 18:45:42 |
| 8 | सिंह | 06:03:24 | सिंह | 23:21:07 |
| 9 | कन्या | 10:38:50 | कन्या | 27:56:32 |
| 10 | तुला | 15:14:15 | वृश्चिक | 02:31:57 |
| 11 | वृश्चिक | 15:14:15 | वृश्चिक | 27:56:32 |
| 12 | धनु | 10:38:50 | धनु | 23:21:07 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | मकर | 18:45:42 |
| 2 | कुम्भ | 28:28:58 |
| 3 | मेष | 03:59:44 |
| 4 | वृष | 02:31:57 |
| 5 | वृष | 26:53:38 |
| 6 | मिथुन | 20:49:43 |
| 7 | कर्क | 18:45:42 |
| 8 | सिंह | 28:28:58 |
| 9 | तुला | 03:59:44 |
| 10 | वृश्चिक | 02:31:57 |
| 11 | वृश्चिक | 26:53:38 |
| 12 | धनु | 20:49:43 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण |
| धनिष्ठा | शतभिषा | पू0भाद्रपद | उ0भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी |
| मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू0फाल्गुनी | उ0फाल्गुनी | हस्त |

### चलित कुंडली

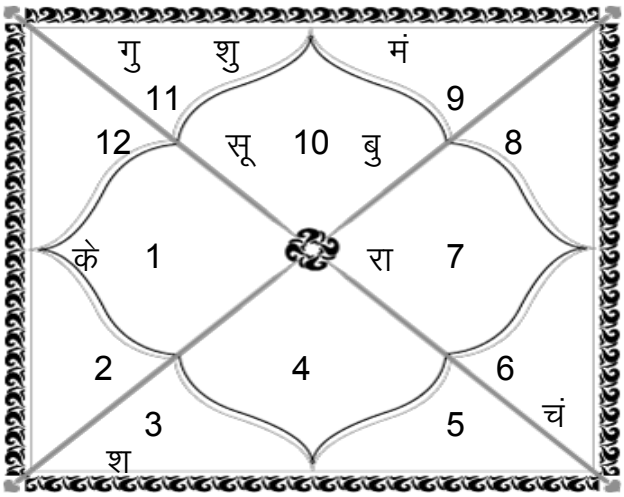


### भाव कुंडली

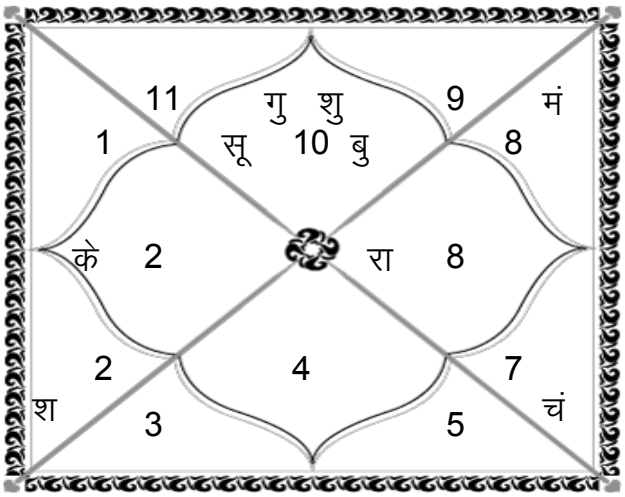




**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# कारक,अवस्था,रश्मि

| ग्रह | ..... कारक ..... | | | ..... अवस्था ..... | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | चर | स्थिर | बालादि | दीप्तादि | शयनादि | रश्मि | ग्रह बल |
| सूर्य | भ्रातृ | पितृ | कुमार | खल | निद्रा | 2.20 | 86 % |
| चंद्र | ज्ञाति | मातृ | बाल | निपीदित | आगम | 0.72 | 54 % |
| मंग | मातृ | भ्रातृ | युवा | मुदित | निद्रा | 5.07 | 53 % |
| बुध | कलत्र | ज्ञाति | बाल | शान्त | आगम | 0.61 | 44 % |
| गुरु | आत्मा | धन | मृत | शान्त | प्रकाश | 0.99 | 59 % |
| शुक्र | पुत्र | कलत्र | कुमार | मुदित | निद्रा | 5.91 | 48 % |
| शनि | अमात्य | आयु | वृद्ध | मुदित | निद्रा | 1.66 | 21 % |
| राहु | ––– | ज्ञान | युवा | खल | आगम | 0.00 | 14 % |
| केतु | ––– | मोक्ष | युवा | शक्त | निद्रा | 0.00 | 14 % |
| **कुल** | | | | | | **17.16** | |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण |
| धनिष्ठा | शतभिषा | पू0भाद्रपद | उ0भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी |
| मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू0फाल्गुनी | उ0फाल्गुनी | हस्त |

चलित कुंडली

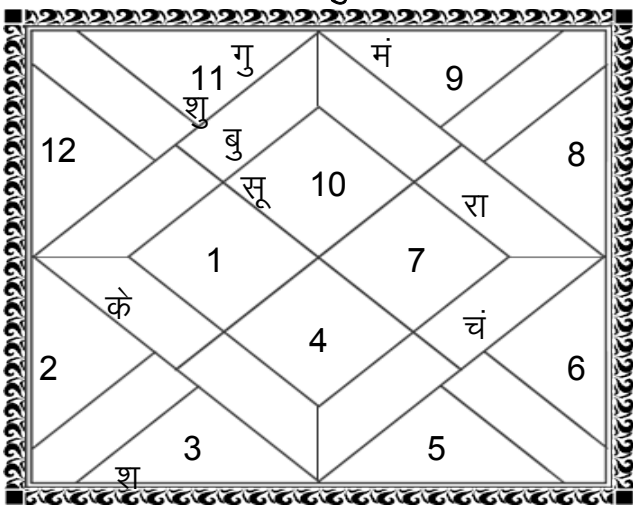


लग्न–चलित

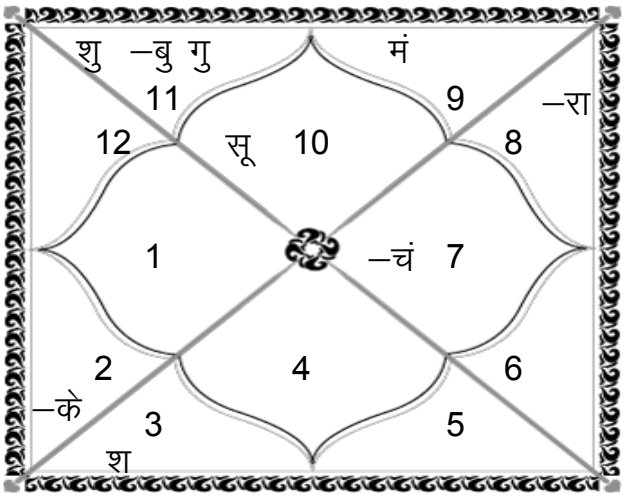




**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# सुदर्शन चक्र

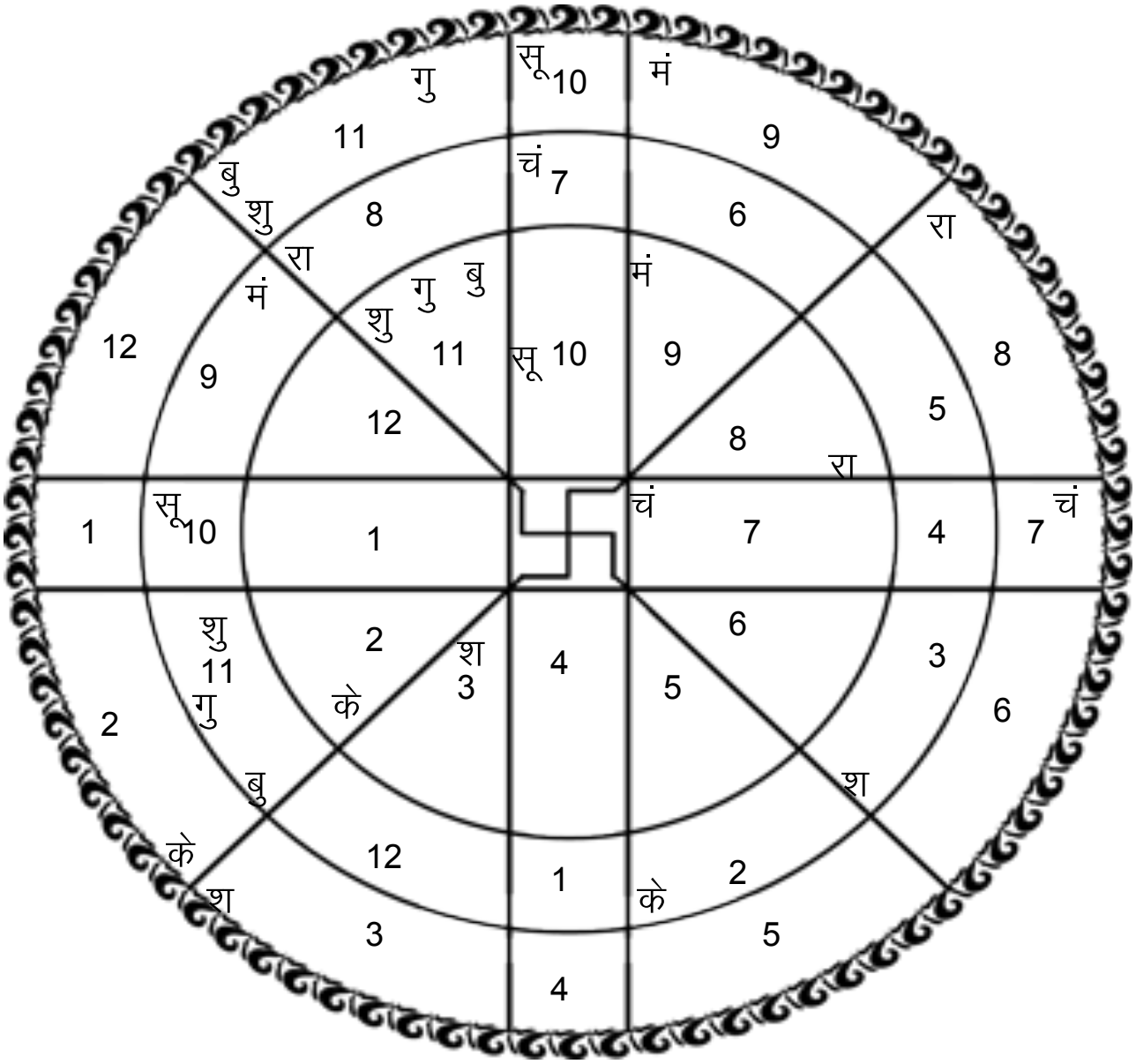


नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# कृष्णमूर्ति पद्धति

## भोग्य दशा काल : मंगल 1 वर्ष 3 मास 13 दिन

### ग्रह

| ग्रह | व | राशि | अंश | रा | न | अं. | प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | | मक | 19:09:57 | शनि | चंद्र | बुध | गुरु |
| चंद्र | | तुला | 04:12:49 | शुक्र | मंग | शुक्र | शनि |
| मंग | | धनु | 14:51:59 | गुरु | शुक्र | शुक्र | शनि |
| बुध | व | कुंभ | 01:22:53 | शनि | मंग | बुध | गुरु |
| गुरु | | कुंभ | 26:09:23 | शनि | गुरु | केतु | राहु |
| शुक्र | | कुंभ | 10:06:03 | शनि | राहु | गुरु | मंग |
| शनि | व | मिथु | 19:57:26 | बुध | राहु | मंग | चंद्र |
| राहु | व | वृश्चि | 13:29:01 | मंग | शनि | राहु | शनि |
| केतु | व | वृष | 13:29:01 | शुक्र | चंद्र | राहु | शुक्र |
| हर्ष | | तुला | 09:03:09 | शुक्र | राहु | गुरु | शनि |
| नेप | | वृश्चि | 17:55:45 | मंग | बुध | बुध | राहु |
| प्लू | व | कन्या | 15:42:41 | बुध | चंद्र | शनि | शनि |

### निरयण भाव

| भाव | राशि | अंश | रा | न | अं. | प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मक | 18:51:38 | शनि | चंद्र | बुध | राहु |
| 2 | कुंभ | 28:34:54 | शनि | गुरु | शुक्र | बुध |
| 3 | मेष | 04:05:41 | मंग | केतु | चंद्र | गुरु |
| 4 | वृष | 02:37:54 | शुक्र | सूर्य | गुरु | मंग |
| 5 | वृष | 26:59:35 | शुक्र | मंग | गुरु | शुक्र |
| 6 | मिथु | 20:55:40 | बुध | गुरु | गुरु | शुक्र |
| 7 | कर्क | 18:51:38 | चंद्र | बुध | केतु | मंग |
| 8 | सिंह | 28:34:54 | सूर्य | सूर्य | मंग | राहु |
| 9 | तुला | 04:05:41 | शुक्र | मंग | शुक्र | शनि |
| 10 | वृश्चि | 02:37:54 | मंग | गुरु | राहु | शुक्र |
| 11 | वृश्चि | 26:59:35 | मंग | बुध | गुरु | शुक्र |
| 12 | धनु | 20:55:40 | गुरु | शुक्र | गुरु | केतु |

**के.पी. अयनांश : 23:24:53**

**फॉरच्युना : तुला 03:54:30**

### लग्न कुंडली

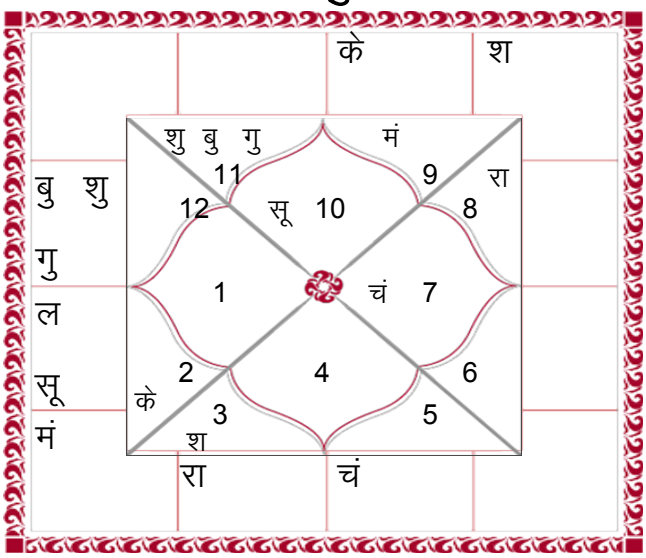


### भाव कुंडली

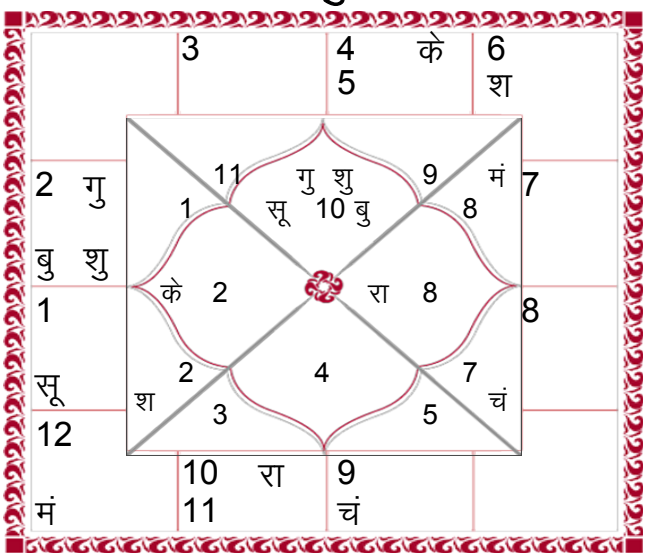




**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# कारकत्व एवं स्वामित्व

## भाव कारक

| भाव | ग्रह |
|---|---|
| 1 | सूर्य, मंग, बुध, गुरु+ शुक्र, शनि– राहु– |
| 2 | शनि– राहु– |
| 3 | चंद्र– मंग– बुध– |
| 4 | मंग– शुक्र– केतु, |
| 5 | मंग– शुक्र– शनि, राहु, |
| 6 | बुध– |
| 7 | सूर्य– चंद्र– केतु– |
| 8 | सूर्य– |
| 9 | सूर्य, चंद्र, मंग– शुक्र– केतु, |
| 10 | चंद्र– मंग– बुध– शुक्र, शनि, राहु, |
| 11 | चंद्र+ मंग, बुध+ |
| 12 | गुरु, |

## ग्रह कारकत्व

| ग्रह | भाव |
|---|---|
| सूर्य | 1, 7- 8- 9, |
| चंद्र | 3- 7- 9, 10- 11+ |
| मंग | 1, 3- 4- 5- 9- 10- 11, |
| बुध | 1, 3- 6- 10- 11+ |
| गुरु | 1+ 12, |
| शुक्र | 1, 4- 5- 9- 10, |
| शनि | 1- 2- 5, 10, |
| राहु | 1- 2- 5, 10, |
| केतु | 4, 7- 9, |

## स्वामित्व

| | |
|---|---|
| लग्न नक्षत्र स्वामी | चन्द्र |
| लग्न राशि स्वामी | शनि |
| राशि नक्षत्र स्वामी | मंगल |
| राशि स्वामी | शुक्र |
| वार स्वामी | सूर्य |
| लग्न अन्तर स्वामी | बुध |
| राशि अन्तर स्वामी | शुक्र |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

## कारकत्व–सारिणी

| भाव | स्थित ग्रह के नक्षत्र में | स्थित ग्रह | स्वामी के नक्षत्र में | स्वामी |
|---|---|---|---|---|
| 1 | मं गु | सू बु गु शु | रा | श |
| 2 | -- | -- | रा | श |
| 3 | -- | -- | चं बु | मं |
| 4 | -- | के | मं | शु |
| 5 | रा | श | मं | शु |
| 6 | -- | -- | -- | बु |
| 7 | -- | -- | सू के | चं |
| 8 | -- | -- | -- | सू |
| 9 | सू के | चं | मं | शु |
| 10 | शु श | रा | चं बु | मं |
| 11 | चं बु | मं | चं बु | मं |
| 12 | -- | -- | गु | गु |

## ग्रह कारक सारिणी–1

| ग्रह | भावाधिपति | नक्षत्राधिपति | स्थित | भाव |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 8 | 4,8 | मकर | 1 |
| चंद्र | 7 | 1 | तुला | 9 |
| मंग | 3,10,11 | 5,9 | धनु | 11 |
| बुध | 6 | 7,11 | कुम्भ | 1 |
| गुरु | 12 | 2,6,10 | कुम्भ | 1 |
| शुक्र | 4,5,9 | 12 | कुम्भ | 1 |
| शनि | 1,2 | --- | मिथुन | 5 |
| राहु | --- | --- | वृश्चिक | 10 |
| केतु | --- | 3 | वृष | 4 |

## ग्रह कारक सारिणी–2

| ग्रह | भावाधि भाव | नक्षत्राधि भाव | स्थित भाव | स्वामित्व | अन्तर स्वामी | स्थित भाव |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 7 | 1 | 9 | 6 | 7,11 | 1 |
| चंद्र | 3,10,11 | 5,9 | 11 | 4,5,9 | 12 | 1 |
| मंग | 4,5,9 | 12 | 1 | 4,5,9 | 12 | 1 |
| बुध | 3,10,11 | 5,9 | 11 | 6 | 7,11 | 1 |
| गुरु | 12 | 2,6,10 | 1 | --- | 3 | 4 |
| शुक्र | --- | --- | 10 | 12 | 2,6,10 | 1 |
| शनि | --- | --- | 10 | 3,10,11 | 5,9 | 11 |
| राहु | 1,2 | --- | 5 | --- | --- | 10 |
| केतु | 7 | 1 | 9 | --- | --- | 10 |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

**सूर्य कुंडली**

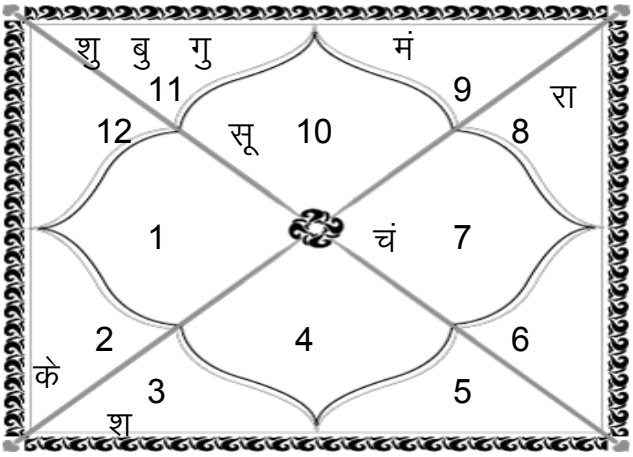


आत्मविचारः

**चन्द्र कुंडली**

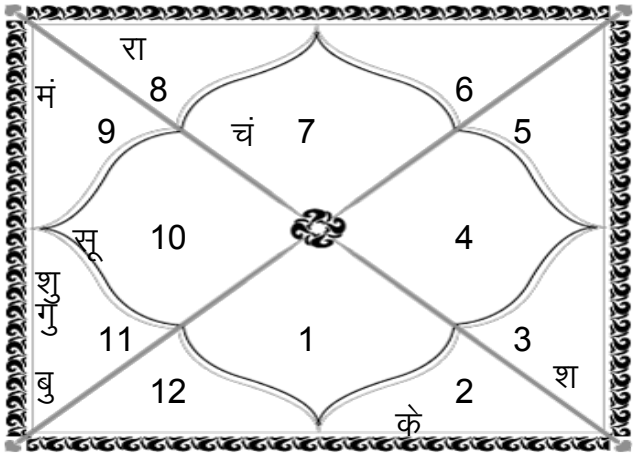


मनोबलविचारः

**लग्न कुंडली**

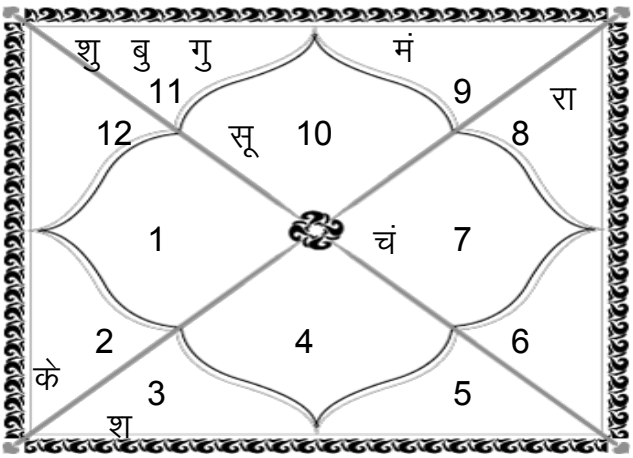


देह विचारः

**होरा कुंडली**

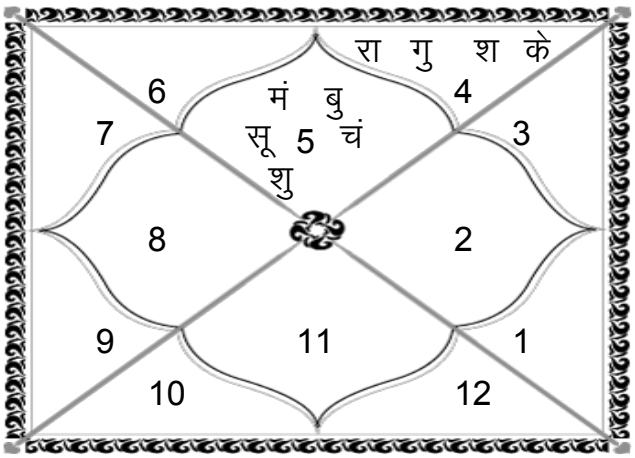


सम्पदाविचारः



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

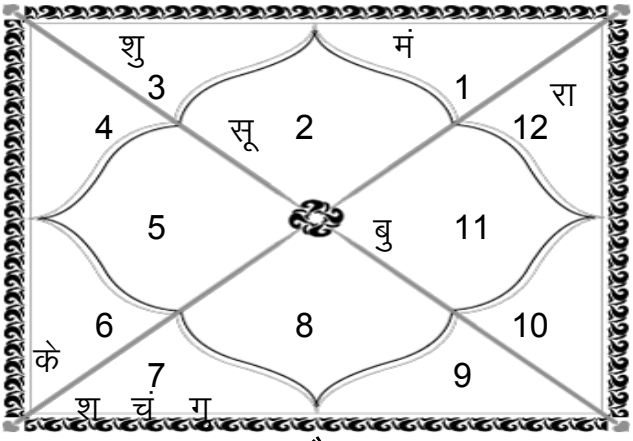


चतुर्थांश कुंडली

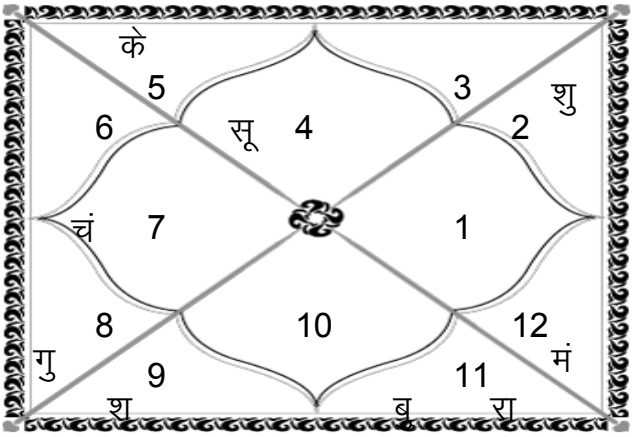


भ्रातृसौख्यम

पंचमांश कुंडली

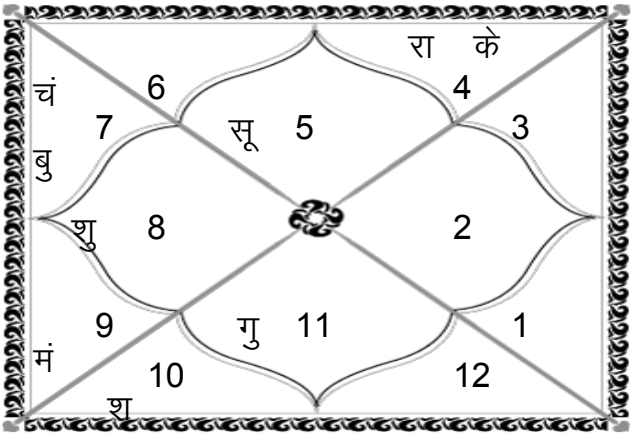


भाग्यविचारः

षष्ठांश कुंडली

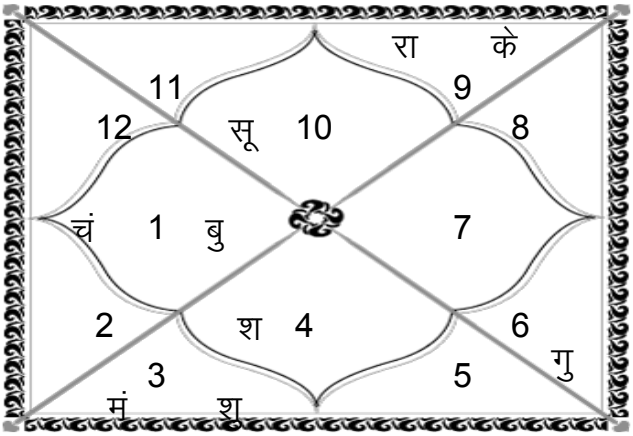


ज्ञानविचारः

सप्तमांश कुंडली

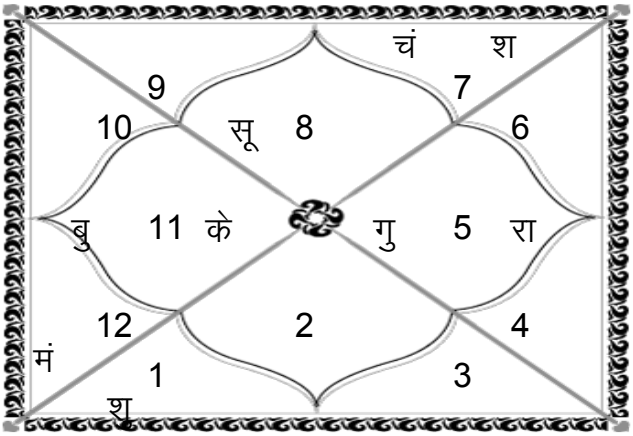


रिपुज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

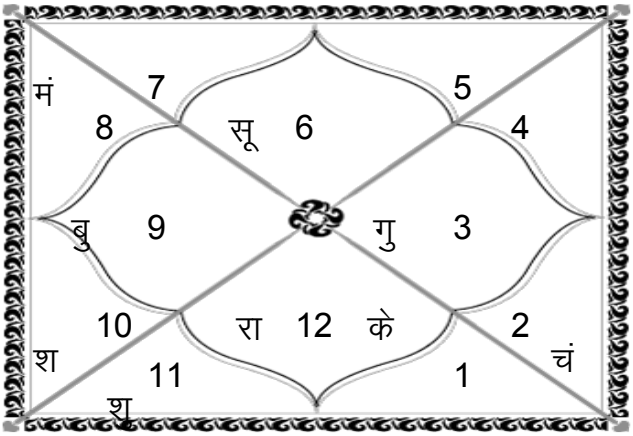


पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

आयुविचारः



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

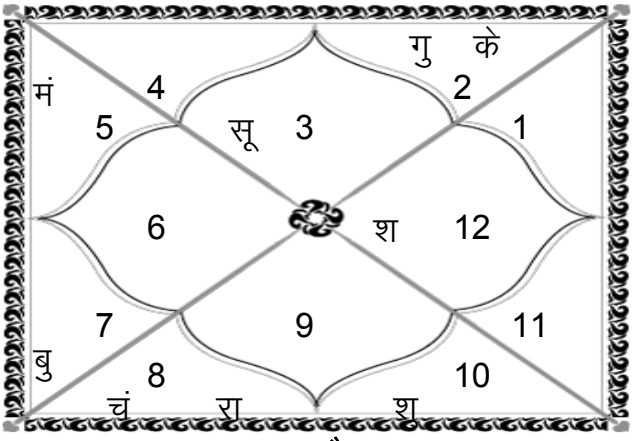


दशमांश कुंडली

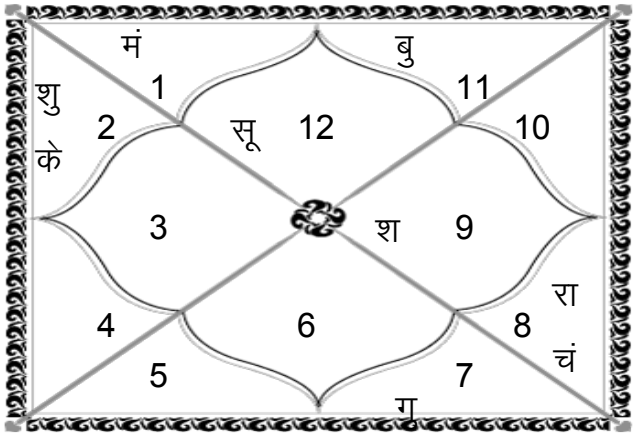


कलत्र सौख्यम

एकादशांश कुंडली

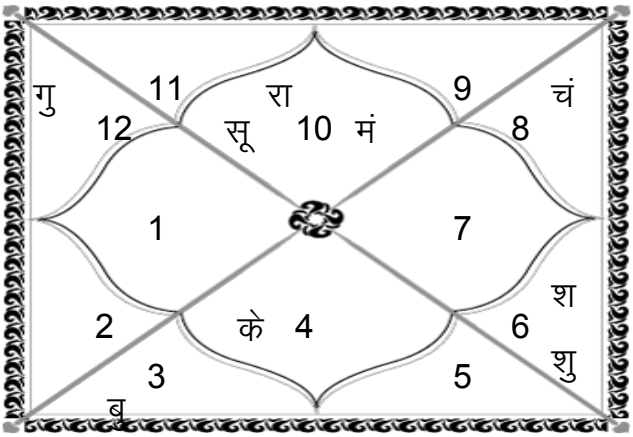


राज्यविचारः

द्वादशांश कुंडली

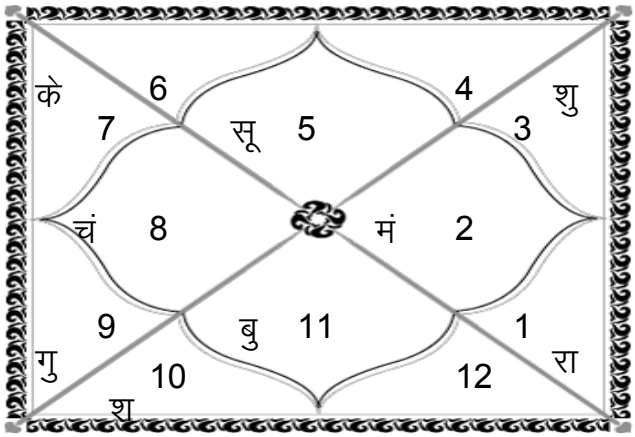


लाभविचारः

षोडशांश कुंडली

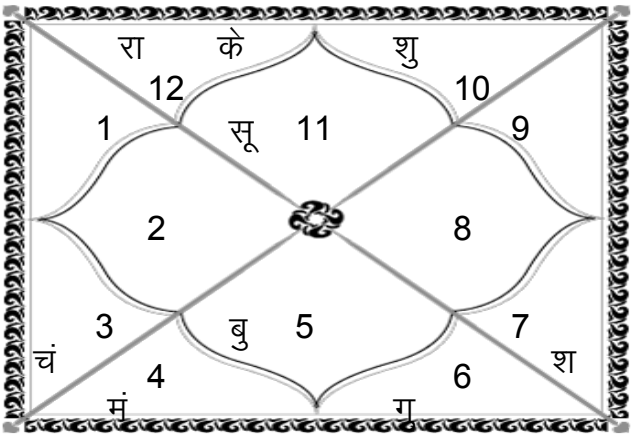


पितृसौख्यम

विंशांश कुंडली

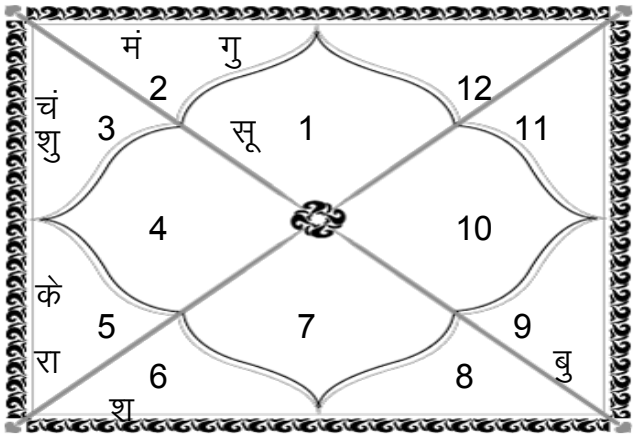


वाहनसुखविचारः

उपासनाज्ञानम्



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

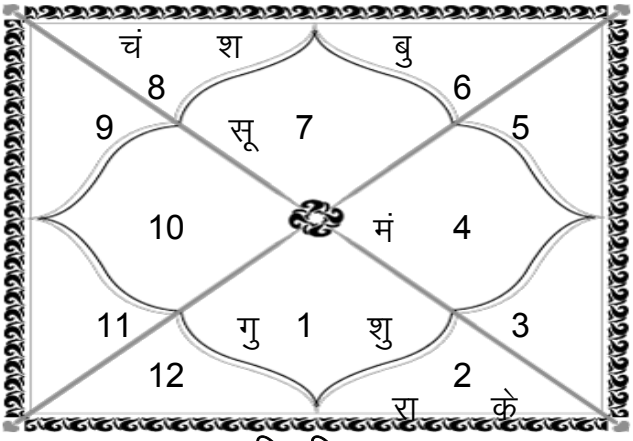


विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

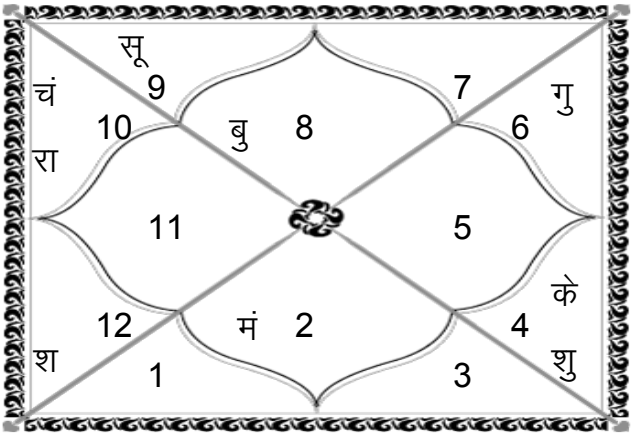


बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

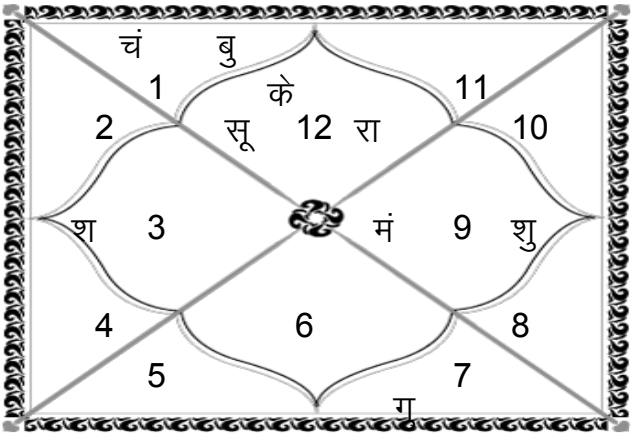


अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

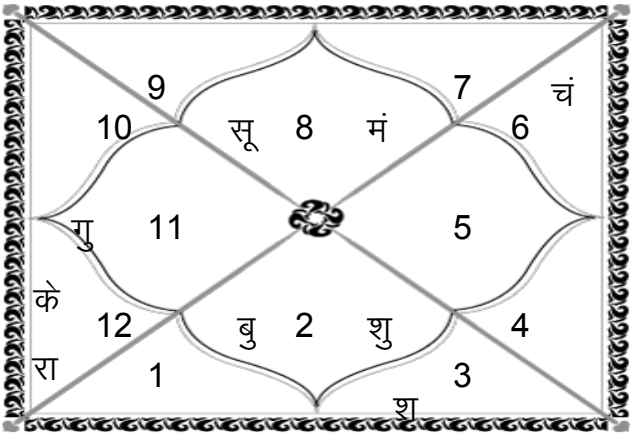


शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

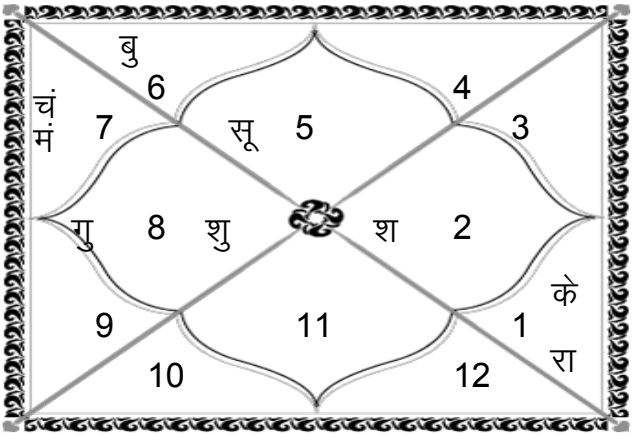


सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

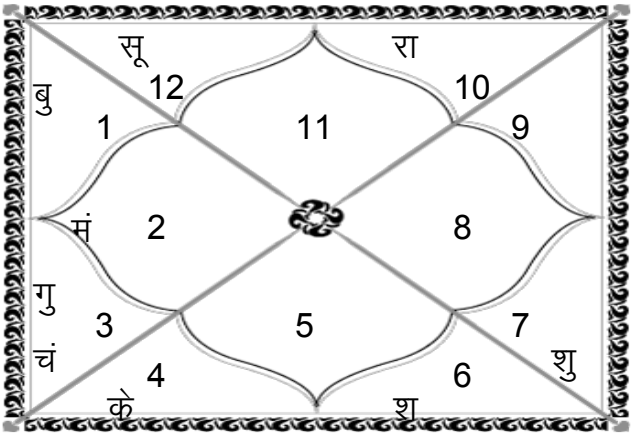


सर्वास्थितिविचारः



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

## षोडशवर्ग सारिणी

| | लग्न | सूर्य | चंद्र | मंग | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | मक | मक | तुला | धनु | कुंभ | कुंभ | कुंभ | मिथु | वृश्चि | वृष |
| होरा | सिंह | सिंह | सिंह | सिंह | सिंह | कर्क | सिंह | कर्क | कर्क | कर्क |
| द्रेष्काण | वृष | वृष | तुला | मेष | कुंभ | तुला | मिथु | तुला | मीन | कन्या |
| चतुर्थांश | कर्क | कर्क | तुला | मीन | कुंभ | वृश्चि | वृष | धनु | कुंभ | सिंह |
| सप्तमांश | वृश्चि | वृश्चि | तुला | मीन | कुंभ | सिंह | मेष | तुला | सिंह | कुंभ |
| नवमांश | मिथु | मिथु | वृश्चि | सिंह | तुला | वृष | मक | मीन | वृश्चि | वृष |
| दशमांश | मीन | मीन | वृश्चि | मेष | कुंभ | तुला | वृष | धनु | वृश्चि | वृष |
| द्वादशांश | सिंह | सिंह | वृश्चि | वृष | कुंभ | धनु | मिथु | मक | मेष | तुला |
| षोडशांश | कुंभ | कुंभ | मिथु | कर्क | सिंह | कन्या | मक | तुला | मीन | मीन |
| विंशांश | मेष | मेष | मिथु | वृष | धनु | वृष | मिथु | कन्या | सिंह | सिंह |
| चतुर्विंशांश | तुला | तुला | वृश्चि | कर्क | कन्या | मेष | मेष | वृश्चि | वृष | वृष |
| सप्तविंशांश | वृश्चि | धनु | मक | वृष | वृश्चि | कन्या | कर्क | मीन | मक | कर्क |
| त्रिंशांश | मीन | मीन | मेष | धनु | मेष | तुला | धनु | मिथु | मीन | मीन |
| खवेदांश | वृश्चि | वृश्चि | कन्या | वृश्चि | वृष | कुंभ | वृष | मिथु | मीन | मीन |
| अक्षवेदांश | सिंह | सिंह | तुला | तुला | कन्या | वृश्चि | वृश्चि | वृष | मेष | मेष |
| षष्ट्यंश | कुंभ | मीन | मिथु | वृष | मेष | मिथु | तुला | कन्या | मक | कर्क |

## वर्ग भेद

| | षडवर्ग | सप्तवर्ग | दशवर्ग | षोडशवर्ग |
|---|---|---|---|---|
| सूर्य | 2 किंसुक | 2 किंसुक | 2 पारिजात | 4 नागपुष्प |
| चन्द्र | 0 ––– | 0 ––– | 0 ––– | 0 ––– |
| मंगल | 1 ––– | 1 ––– | 2 पारिजात | 3 कुसुम |
| बुध | 0 ––– | 0 ––– | 0 ––– | 2 भेदक |
| गुरु | 2 किंसुक | 2 किंसुक | 2 पारिजात | 2 भेदक |
| शुक्र | 0 ––– | 0 ––– | 2 पारिजात | 4 नागपुष्प |
| शनि | 2 किंसुक | 3 व्यंजन | 4 गोपुर | 4 नागपुष्प |
| राहु | 0 ––– | 0 ––– | 0 ––– | 0 ––– |
| केतु | 1 ––– | 1 ––– | 2 पारिजात | 3 कुसुम |

## विंशोपक बल

| | सूर्य | चंद्र | मंग | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| षडवर्ग | 12.15 | 11.30 | 18.10 | 9.25 | 7.60 | 9.85 | 9.75 | 11.25 | 15.95 |
| सप्तवर्ग | 13.28 | 11.10 | 18.00 | 9.18 | 9.13 | 10.48 | 9.83 | 11.00 | 15.10 |
| दशवर्ग | 14.55 | 11.20 | 17.33 | 11.48 | 7.78 | 13.40 | 9.93 | 11.13 | 12.50 |
| षोडशवर्ग | 13.58 | 10.80 | 17.30 | 12.03 | 7.33 | 12.85 | 9.20 | 11.33 | 12.70 |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

## नैसर्गिक मैत्री

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंग | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ... | मित्र | मित्र | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु |
| चंद्र | मित्र | ... | सम | मित्र | सम | सम | सम | शत्रु | शत्रु |
| मंग | मित्र | मित्र | ... | शत्रु | मित्र | सम | सम | शत्रु | मित्र |
| बुध | मित्र | शत्रु | सम | ... | सम | मित्र | सम | सम | सम |
| गुरु | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | ... | शत्रु | सम | सम | सम |
| शुक्र | शत्रु | शत्रु | सम | मित्र | सम | ... | मित्र | मित्र | मित्र |
| शनि | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | सम | मित्र | ... | मित्र | शत्रु |
| राहु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम | सम | मित्र | मित्र | ... | शत्रु |
| केतु | शत्रु | शत्रु | मित्र | सम | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | ... |

## तात्कालिक मैत्री

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंग | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ... | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | मित्र | शत्रु |
| चंद्र | मित्र | ... | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु |
| मंग | मित्र | मित्र | ... | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | मित्र | शत्रु |
| बुध | मित्र | शत्रु | मित्र | ... | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र |
| गुरु | मित्र | शत्रु | मित्र | शत्रु | ... | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र |
| शुक्र | मित्र | शत्रु | मित्र | शत्रु | शत्रु | ... | शत्रु | मित्र | मित्र |
| शनि | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | ... | शत्रु | मित्र |
| राहु | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | ... | शत्रु |
| केतु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | ... |

## पंचधा मैत्री

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंग | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ... | अतिमित्र | अतिमित्र | मित्र | अतिमित्र | सम | अधिशत्रु | सम | अधिशत्रु |
| चंद्र | अतिमित्र | ... | मित्र | सम | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम | अधिशत्रु |
| मंग | अतिमित्र | अतिमित्र | ... | सम | अतिमित्र | मित्र | शत्रु | सम | सम |
| बुध | अतिमित्र | अधिशत्रु | मित्र | ... | शत्रु | सम | शत्रु | मित्र | मित्र |
| गुरु | अतिमित्र | सम | अतिमित्र | अधिशत्रु | ... | अधिशत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र |
| शुक्र | सम | अधिशत्रु | मित्र | सम | शत्रु | ... | सम | अतिमित्र | अतिमित्र |
| शनि | अधिशत्रु | अधिशत्रु | अधिशत्रु | सम | शत्रु | सम | ... | सम | सम |
| राहु | सम | सम | सम | मित्र | मित्र | अतिमित्र | सम | ... | अधिशत्रु |
| केतु | अधिशत्रु | अधिशत्रु | सम | मित्र | मित्र | अतिमित्र | सम | अधिशत्रु | ... |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# षट्बल तथा भावबल सारिणी

## षट्बल

| | सूर्य | चंद्र | मंग | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च बल | 33 | 10 | 46 | 15 | 17 | 44 | 20 |
| सप्तवर्गज बल | 129 | 79 | 158 | 60 | 69 | 56 | 66 |
| ओजयुग्मक बल | 15 | 15 | 30 | 30 | 15 | 15 | 15 |
| केन्द्र बल | 60 | 60 | 15 | 30 | 30 | 30 | 15 |
| द्रेष्काण बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 15 |
| कुल स्थान बल | 237 | 163 | 248 | 135 | 131 | 146 | 131 |
| कुल दिग्बल | 34 | 9 | 46 | 56 | 48 | 32 | 50 |
| नतोन्नत बल | 33 | 27 | 27 | 60 | 33 | 33 | 27 |
| पक्ष बल | 25 | 70 | 25 | 35 | 35 | 35 | 25 |
| त्रिभाग बल | 0 | 0 | 0 | 60 | 60 | 0 | 0 |
| अब्द बल | 0 | 0 | 15 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मास बल | 0 | 30 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| वार बल | 45 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| होरा बल | 60 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| अयन बल | 16 | 44 | 0 | 47 | 25 | 17 | 1 |
| युद्ध बल | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| कुल कालबल | 179 | 171 | 67 | 202 | 152 | 84 | 53 |
| कुल चेष्टाबल | 0 | 0 | 13 | 50 | 14 | 14 | 50 |
| कुल नैसर्गिक बल | 60 | 51 | 17 | 26 | 34 | 43 | 9 |
| कुल दृग्बल | -3 | 9 | -5 | -4 | -12 | -6 | 7 |
| कुल षट्बल | 508 | 404 | 387 | 464 | 368 | 314 | 300 |
| रूप षट्बल | 8.5 | 6.7 | 6.5 | 7.7 | 6.1 | 5.2 | 5.0 |
| न्यूनतम आवश्यकता | 5 | 6 | 5 | 7 | 7 | 6 | 5 |
| अनुपात | 1.7 | 1.1 | 1.3 | 1.1 | 0.9 | 1.0 | 1.0 |
| संबंधित पद | 1 | 3 | 2 | 4 | 7 | 6 | 5 |

## इष्ट फल

| | सूर्य | चंद्र | मंग | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इष्ट फल | 21.65 | 18.35 | 24.74 | 27.00 | 15.52 | 25.22 | 31.70 |
| कष्ट फल | 35.15 | 35.50 | 25.91 | 21.28 | 44.39 | 26.74 | 19.65 |

## भाव बल

| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भावाधिपति बल | 300 | 300 | 368 | 314 | 314 | 464 | 404 | 508 | 464 | 387 | 387 | 368 |
| भावदिग्बल | 30 | 50 | 50 | 0 | 10 | 10 | 30 | 40 | 20 | 30 | 20 | 40 |
| भावदृष्टि बल | -2 | -11 | -5 | 74 | 81 | 32 | 49 | 84 | 66 | 69 | 16 | -5 |
| कुल भाव बल | 327 | 339 | 413 | 388 | 405 | 507 | 484 | 632 | 550 | 487 | 424 | 403 |
| रूप भाव बल | 5.5 | 5.6 | 6.9 | 6.5 | 6.8 | 8.4 | 8.1 | 10.5 | 9.2 | 8.1 | 7.1 | 6.7 |
| संबंधित पद | 12 | 11 | 7 | 10 | 8 | 3 | 5 | 1 | 2 | 4 | 6 | 9 |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# उपग्रह एवं आरूढ़

| उपग्रह | संक्षि | राशि | अंश | उच्च | स्थिति | नक्षत्र | पद | नं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | ल | मक | 18:45:42 | –– | –– | श्रवण | 3 | 22 |
| गुलिक | गु | कन्या | 25:20:32 | –– | –– | चित्रा | 1 | 14 |
| काल | का | तुला | 16:55:19 | –– | –– | स्वाति | 4 | 15 |
| मृत्यु | मृ | वृश्चि | 29:34:52 | –– | मूल | ज्येष्ठा | 4 | 18 |
| यमघंटक | यम | सिंह | 11:30:16 | –– | –– | मघा | 4 | 10 |
| अर्द्धप्रहर | अर्द्ध | धनु | 22:43:13 | –– | –– | पूर्वाषाढ़ा | 3 | 20 |
| धूम | धू | मिथु | 02:24:01 | –– | –– | मृगशिरा | 3 | 5 |
| व्यतिपात | व्य | मक | 27:35:59 | –– | –– | धनिष्ठा | 2 | 23 |
| परिवेश | परि | कर्क | 27:35:59 | –– | –– | आश्लेषा | 4 | 9 |
| इन्द्रचाप | इ | धनु | 02:24:01 | उच्च | –– | मूल | 1 | 19 |
| उपकेतु | उप | धनु | 19:04:01 | –– | –– | पूर्वाषाढ़ा | 2 | 20 |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्राणपद | : | मक | 26:28:16 | कारकाँश लग्न | : | वृष | 24:30:55 |
| भाव लग्न | : | मक | 19:07:54 | होरा लग्न | : | मक | 19:30:07 |
| घटी लग्न | : | मक | 20:55:05 | वर्णद लग्न | : | सिंह | 21:44:11 |

**उपग्रह कुंडली**

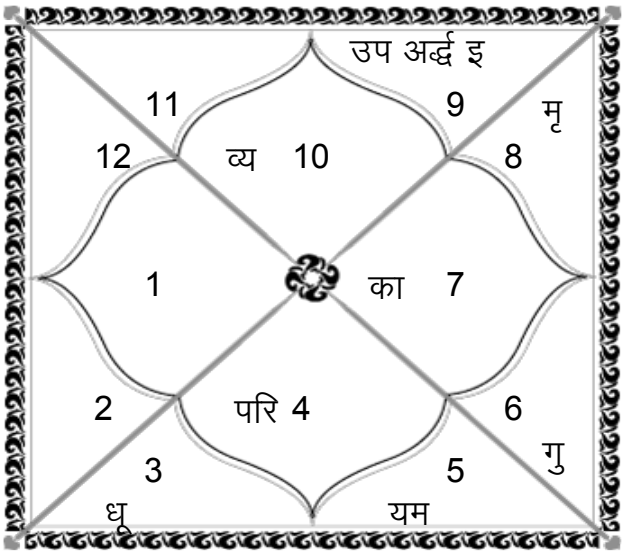


**आरूढ़ कुंडली**

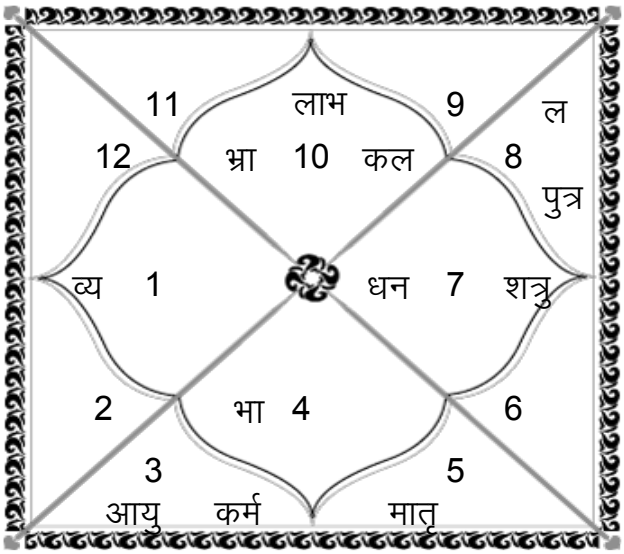




**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

## सूर्य का अष्टकवर्ग

| | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | तु | वृश्चि | ध | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 8 |
| गुरु | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 4 |
| मंग | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| सूर्य | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| शुक्र | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| बुध | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| चंद्र | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 4 |
| लग्न | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 6 |
| **कुल** | **5** | **2** | **4** | **4** | **0** | **5** | **7** | **4** | **3** | **5** | **3** | **6** | **48** |

## चंद्र का अष्टकवर्ग

| | तु | वृश्चि | ध | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 4 |
| गुरु | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| मंग | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 6 |
| सूर्य | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 6 |
| शुक्र | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 7 |
| बुध | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 8 |
| चंद्र | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| लग्न | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| **कुल** | **6** | **6** | **4** | **1** | **3** | **4** | **5** | **4** | **5** | **2** | **6** | **3** | **49** |

## मंगल का अष्टकवर्ग

| | ध | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | तु | वृश्चि | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 7 |
| गुरु | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 4 |
| मंग | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| सूर्य | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 5 |
| शुक्र | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| बुध | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| चंद्र | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| लग्न | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 5 |
| **कुल** | **6** | **5** | **1** | **5** | **2** | **1** | **5** | **4** | **1** | **3** | **3** | **3** | **39** |

## बुद्ध का अष्टकवर्ग

| | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | तु | वृश्चि | ध | म | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 8 |
| गुरु | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 4 |
| मंग | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 8 |
| सूर्य | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 5 |
| शुक्र | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 8 |
| बुध | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| चंद्र | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 6 |
| लग्न | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 7 |
| **कुल** | **4** | **4** | **4** | **3** | **6** | **5** | **3** | **5** | **4** | **4** | **6** | **6** | **54** |

## गुरु का अष्टकवर्ग

| | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | तु | वृश्चि | ध | म | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| गुरु | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| मंग | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| सूर्य | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 9 |
| शुक्र | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 6 |
| बुध | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| चंद्र | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 5 |
| लग्न | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 9 |
| **कुल** | **5** | **5** | **4** | **4** | **5** | **5** | **4** | **4** | **6** | **7** | **4** | **3** | **56** |

## शुक्र का अष्टकवर्ग

| | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | तु | वृश्चि | ध | म | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 7 |
| गुरु | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 5 |
| मंग | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 6 |
| सूर्य | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 3 |
| शुक्र | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 9 |
| बुध | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 5 |
| चंद्र | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| लग्न | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| **कुल** | **5** | **4** | **4** | **4** | **4** | **1** | **5** | **5** | **6** | **6** | **5** | **3** | **52** |

## शनि का अष्टकवर्ग

| | मि | र्क | सि | कं | तु | वृश्चि | ध | म | कुं | मी | मे | वृ | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 4 |
| गुरु | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| मंग | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| सूर्य | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 7 |
| शुक्र | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| बुध | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 6 |
| चंद्र | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 3 |
| लग्न | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 6 |
| **कुल** | **2** | **4** | **3** | **2** | **5** | **5** | **4** | **5** | **2** | **2** | **4** | **1** | **39** |

## लग्न का अष्टकवर्ग

| | म | कुं | मी | मे | वृ | मि | र्क | सि | कं | तु | वृश्चि | ध | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 6 |
| गुरु | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 9 |
| मंग | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| सूर्य | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 6 |
| शुक्र | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 7 |
| बुध | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| चंद्र | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 5 |
| लग्न | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 4 |
| **कुल** | **0** | **4** | **7** | **3** | **4** | **5** | **3** | **3** | **5** | **5** | **5** | **5** | **49** |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# अष्टकवर्ग सारिणी

## सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

| | मे | वृ | मि | कर्क | सि | कं | तु | वृश्चि | ध | म | कुं | मी | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 4 | 1 | 2 | 4 | 3 | 2 | 5 | 5 | 4 | 5 | 2 | 2 | 39 |
| गुरु | 4 | 4 | 5 | 5 | 4 | 4 | 6 | 7 | 4 | 3 | 5 | 5 | 56 |
| मंग | 2 | 1 | 5 | 4 | 1 | 3 | 3 | 3 | 6 | 5 | 1 | 5 | 39 |
| सूर्य | 4 | 0 | 5 | 7 | 4 | 3 | 5 | 3 | 6 | 5 | 2 | 4 | 48 |
| शुक्र | 4 | 4 | 4 | 1 | 5 | 5 | 6 | 6 | 5 | 3 | 5 | 4 | 52 |
| बुध | 4 | 3 | 6 | 5 | 3 | 5 | 4 | 4 | 6 | 6 | 4 | 4 | 54 |
| चंद्र | 5 | 4 | 5 | 2 | 6 | 3 | 6 | 6 | 4 | 1 | 3 | 4 | 49 |
| बिन्दु | 27 | 17 | 32 | 28 | 26 | 25 | 35 | 34 | 35 | 28 | 22 | 28 | 337 |
| रेखा | 29 | 39 | 24 | 28 | 30 | 31 | 21 | 22 | 21 | 28 | 34 | 28 | 335 |

## त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

| | मे | वृ | मि | कर्क | सि | कं | तु | वृश्चि | ध | म | कुं | मी | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 0 | 0 | 2 | 0 | 1 | 3 | 3 | 1 | 4 | 0 | 0 | 15 |
| गुरु | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 5 |
| मंग | 1 | 0 | 4 | 1 | 0 | 2 | 2 | 0 | 5 | 4 | 0 | 2 | 21 |
| सूर्य | 0 | 0 | 3 | 4 | 0 | 3 | 3 | 0 | 2 | 5 | 0 | 1 | 21 |
| शुक्र | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 2 | 2 | 5 | 1 | 0 | 1 | 3 | 16 |
| बुध | 1 | 0 | 2 | 1 | 0 | 2 | 0 | 0 | 3 | 3 | 0 | 0 | 12 |
| चंद्र | 1 | 3 | 2 | 0 | 2 | 2 | 3 | 4 | 0 | 0 | 0 | 2 | 19 |
| रेखा | 4 | 5 | 11 | 8 | 3 | 13 | 14 | 14 | 12 | 16 | 1 | 8 | 109 |

## एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

| | मे | वृ | मि | कर्क | सि | कं | तु | वृश्चि | ध | म | कुं | मी | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शनि | 1 | 0 | 0 | 2 | 0 | 1 | 3 | 2 | 1 | 4 | 0 | 0 | 14 |
| गुरु | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 4 |
| मंग | 1 | 0 | 4 | 1 | 0 | 0 | 2 | 0 | 5 | 4 | 0 | 0 | 17 |
| सूर्य | 0 | 0 | 3 | 4 | 0 | 0 | 3 | 0 | 2 | 5 | 0 | 0 | 17 |
| शुक्र | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 2 | 2 | 5 | 1 | 0 | 1 | 2 | 14 |
| बुध | 1 | 0 | 2 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 | 3 | 0 | 0 | 10 |
| चंद्र | 1 | 0 | 2 | 0 | 2 | 0 | 3 | 3 | 0 | 0 | 0 | 2 | 13 |
| रेखा | 4 | 0 | 11 | 8 | 3 | 4 | 14 | 12 | 12 | 16 | 1 | 4 | 89 |

## शोध्य पिंड

| | सूर्य | चंद्र | मंग | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि पिंड | 104 | 112 | 122 | 69 | 28 | 118 | 86 |
| ग्रह पिंड | 71 | 25 | 90 | 49 | 5 | 40 | 43 |
| शोध्य पिंड | 175 | 137 | 212 | 118 | 33 | 158 | 129 |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : मंगल 1 वर्ष 4 मास 2 दिन

| मंगल | | राहु | | गुरु | | शनि | | बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **02/02/1975** | | **05/06/1976** | | **06/06/1994** | | **06/06/2010** | | **05/06/2029** | |
| **05/06/1976** | | **06/06/1994** | | **06/06/2010** | | **05/06/2029** | | **06/06/2046** | |
| | 00/00/0000 | राहु | 16/02/1979 | गुरु | 24/07/1996 | शनि | 08/06/2013 | बुध | 02/11/2031 |
| | 00/00/0000 | गुरु | 12/07/1981 | शनि | 04/02/1999 | बुध | 17/02/2016 | केतु | 29/10/2032 |
| | 00/00/0000 | शनि | 18/05/1984 | बुध | 12/05/2001 | केतु | 27/03/2017 | शुक्र | 30/08/2035 |
| | 00/00/0000 | बुध | 05/12/1986 | केतु | 18/04/2002 | शुक्र | 27/05/2020 | सूर्य | 06/07/2036 |
| | 00/00/0000 | केतु | 24/12/1987 | शुक्र | 17/12/2004 | सूर्य | 09/05/2021 | चंद्र | 05/12/2037 |
| | 02/02/1975 | शुक्र | 24/12/1990 | सूर्य | 05/10/2005 | चंद्र | 08/12/2022 | मंग | 02/12/2038 |
| शुक्र | 30/06/1975 | सूर्य | 17/11/1991 | चंद्र | 04/02/2007 | मंग | 17/01/2024 | राहु | 21/06/2041 |
| सूर्य | 05/11/1975 | चंद्र | 18/05/1993 | मंग | 11/01/2008 | राहु | 23/11/2026 | गुरु | 27/09/2043 |
| चंद्र | 05/06/1976 | मंग | 06/06/1994 | राहु | 06/06/2010 | गुरु | 05/06/2029 | शनि | 06/06/2046 |

| केतु | | शुक्र | | सूर्य | | चन्द्र | | मंगल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **06/06/2046** | | **05/06/2053** | | **05/06/2073** | | **06/06/2079** | | **05/06/2089** | |
| **05/06/2053** | | **05/06/2073** | | **06/06/2079** | | **05/06/2089** | | **00/00/0000** | |
| केतु | 02/11/2046 | शुक्र | 05/10/2056 | सूर्य | 23/09/2073 | चंद्र | 05/04/2080 | मंग | 02/11/2089 |
| शुक्र | 02/01/2048 | सूर्य | 05/10/2057 | चंद्र | 25/03/2074 | मंग | 04/11/2080 | राहु | 20/11/2090 |
| सूर्य | 09/05/2048 | चंद्र | 06/06/2059 | मंग | 30/07/2074 | राहु | 06/05/2082 | गुरु | 27/10/2091 |
| चंद्र | 08/12/2048 | मंग | 05/08/2060 | राहु | 24/06/2075 | गुरु | 05/09/2083 | शनि | 05/12/2092 |
| मंग | 06/05/2049 | राहु | 06/08/2063 | गुरु | 11/04/2076 | शनि | 06/04/2085 | बुध | 02/12/2093 |
| राहु | 25/05/2050 | गुरु | 06/04/2066 | शनि | 24/03/2077 | बुध | 05/09/2086 | केतु | 30/04/2094 |
| गुरु | 30/04/2051 | शनि | 05/06/2069 | बुध | 29/01/2078 | केतु | 06/04/2087 | शुक्र | 02/02/2095 |
| शनि | 08/06/2052 | बुध | 05/04/2072 | केतु | 06/06/2078 | शुक्र | 05/12/2088 | | 00/00/0000 |
| बुध | 05/06/2053 | केतु | 05/06/2073 | शुक्र | 06/06/2079 | सूर्य | 05/06/2089 | | 00/00/0000 |

– उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंग 1 वर्ष 4 मा 8 दि होता है।

– उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# विंशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

| शनि–राहु | | शनि–गुरु | | बुध–बुध | | बुध–केतु | | बुध–शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **17/01/2024** | | **23/11/2026** | | **05/06/2029** | | **02/11/2031** | | **29/10/2032** | |
| **23/11/2026** | | **05/06/2029** | | **02/11/2031** | | **29/10/2032** | | **30/08/2035** | |
| राहु | 21/06/2024 | गुरु | 27/03/2027 | बुध | 08/10/2029 | केतु | 23/11/2031 | शुक्र | 20/04/2033 |
| गुरु | 07/11/2024 | शनि | 20/08/2027 | केतु | 28/11/2029 | शुक्र | 23/01/2032 | सूर्य | 11/06/2033 |
| शनि | 21/04/2025 | बुध | 29/12/2027 | शुक्र | 24/04/2030 | सूर्य | 10/02/2032 | चंद्र | 05/09/2033 |
| बुध | 15/09/2025 | केतु | 21/02/2028 | सूर्य | 07/06/2030 | चंद्र | 11/03/2032 | मंग | 04/11/2033 |
| केतु | 15/11/2025 | शुक्र | 24/07/2028 | चंद्र | 19/08/2030 | मंग | 01/04/2032 | राहु | 08/04/2034 |
| शुक्र | 08/05/2026 | सूर्य | 09/09/2028 | मंग | 10/10/2030 | राहु | 25/05/2032 | गुरु | 24/08/2034 |
| सूर्य | 29/06/2026 | चंद्र | 25/11/2028 | राहु | 19/02/2031 | गुरु | 13/07/2032 | शनि | 04/02/2035 |
| चंद्र | 23/09/2026 | मंग | 18/01/2029 | गुरु | 16/06/2031 | शनि | 08/09/2032 | बुध | 01/07/2035 |
| मंग | 23/11/2026 | राहु | 05/06/2029 | शनि | 02/11/2031 | बुध | 29/10/2032 | केतु | 30/08/2035 |

| बुध–सूर्य | | बुध–चंद्र | | बुध–मंग | | बुध–राहु | | बुध–गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **30/08/2035** | | **06/07/2036** | | **05/12/2037** | | **02/12/2038** | | **21/06/2041** | |
| **06/07/2036** | | **05/12/2037** | | **02/12/2038** | | **21/06/2041** | | **27/09/2043** | |
| सूर्य | 15/09/2035 | चंद्र | 18/08/2036 | मंग | 26/12/2037 | राहु | 21/04/2039 | गुरु | 09/10/2041 |
| चंद्र | 11/10/2035 | मंग | 17/09/2036 | राहु | 19/02/2038 | गुरु | 23/08/2039 | शनि | 17/02/2042 |
| मंग | 29/10/2035 | राहु | 04/12/2036 | गुरु | 08/04/2038 | शनि | 18/01/2040 | बुध | 14/06/2042 |
| राहु | 14/12/2035 | गुरु | 11/02/2037 | शनि | 04/06/2038 | बुध | 29/05/2040 | केतु | 02/08/2042 |
| गुरु | 25/01/2036 | शनि | 03/05/2037 | बुध | 25/07/2038 | केतु | 22/07/2040 | शुक्र | 18/12/2042 |
| शनि | 14/03/2036 | बुध | 16/07/2037 | केतु | 16/08/2038 | शुक्र | 24/12/2040 | सूर्य | 28/01/2043 |
| बुध | 27/04/2036 | केतु | 15/08/2037 | शुक्र | 15/10/2038 | सूर्य | 09/02/2041 | चंद्र | 07/04/2043 |
| केतु | 15/05/2036 | शुक्र | 09/11/2037 | सूर्य | 02/11/2038 | चंद्र | 27/04/2041 | मंग | 25/05/2043 |
| शुक्र | 06/07/2036 | सूर्य | 05/12/2037 | चंद्र | 02/12/2038 | मंग | 21/06/2041 | राहु | 27/09/2043 |

| बुध–शनि | | केतु–केतु | | केतु–शुक्र | | केतु–सूर्य | | केतु–चंद्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **27/09/2043** | | **06/06/2046** | | **02/11/2046** | | **02/01/2048** | | **09/05/2048** | |
| **06/06/2046** | | **02/11/2046** | | **02/01/2048** | | **09/05/2048** | | **08/12/2048** | |
| शनि | 29/02/2044 | केतु | 14/06/2046 | शुक्र | 12/01/2047 | सूर्य | 08/01/2048 | चंद्र | 27/05/2048 |
| बुध | 17/07/2044 | शुक्र | 09/07/2046 | सूर्य | 02/02/2047 | चंद्र | 19/01/2048 | मंग | 08/06/2048 |
| केतु | 13/09/2044 | सूर्य | 17/07/2046 | चंद्र | 10/03/2047 | मंग | 26/01/2048 | राहु | 10/07/2048 |
| शुक्र | 24/02/2045 | चंद्र | 29/07/2046 | मंग | 04/04/2047 | राहु | 15/02/2048 | गुरु | 07/08/2048 |
| सूर्य | 14/04/2045 | मंग | 07/08/2046 | राहु | 06/06/2047 | गुरु | 03/03/2048 | शनि | 10/09/2048 |
| चंद्र | 05/07/2045 | राहु | 29/08/2046 | गुरु | 02/08/2047 | शनि | 23/03/2048 | बुध | 10/10/2048 |
| मंग | 31/08/2045 | गुरु | 18/09/2046 | शनि | 09/10/2047 | बुध | 10/04/2048 | केतु | 23/10/2048 |
| राहु | 26/01/2046 | शनि | 12/10/2046 | बुध | 08/12/2047 | केतु | 17/04/2048 | शुक्र | 27/11/2048 |
| गुरु | 06/06/2046 | बुध | 02/11/2046 | केतु | 02/01/2048 | शुक्र | 09/05/2048 | सूर्य | 08/12/2048 |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# विंशोत्तरी दशा–प्रत्यन्तर

| केतु–मंग | | केतु–राहु | | केतु–गुरु | | केतु–शनि | | केतु–बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **08/12/2048** | | **06/05/2049** | | **25/05/2050** | | **30/04/2051** | | **08/06/2052** | |
| **06/05/2049** | | **25/05/2050** | | **30/04/2051** | | **08/06/2052** | | **05/06/2053** | |
| मंग | 17/12/2048 | राहु | 03/07/2049 | गुरु | 09/07/2050 | शनि | 04/07/2051 | बुध | 30/07/2052 |
| राहु | 08/01/2049 | गुरु | 23/08/2049 | शनि | 01/09/2050 | बुध | 30/08/2051 | केतु | 20/08/2052 |
| गुरु | 28/01/2049 | शनि | 22/10/2049 | बुध | 19/10/2050 | केतु | 22/09/2051 | शुक्र | 19/10/2052 |
| शनि | 20/02/2049 | बुध | 16/12/2049 | केतु | 08/11/2050 | शुक्र | 29/11/2051 | सूर्य | 06/11/2052 |
| बुध | 14/03/2049 | केतु | 07/01/2050 | शुक्र | 04/01/2051 | सूर्य | 19/12/2051 | चंद्र | 06/12/2052 |
| केतु | 22/03/2049 | शुक्र | 12/03/2050 | सूर्य | 21/01/2051 | चंद्र | 22/01/2052 | मंग | 27/12/2052 |
| शुक्र | 16/04/2049 | सूर्य | 31/03/2050 | चंद्र | 18/02/2051 | मंग | 15/02/2052 | राहु | 20/02/2053 |
| सूर्य | 24/04/2049 | चंद्र | 02/05/2050 | मंग | 10/03/2051 | राहु | 15/04/2052 | गुरु | 09/04/2053 |
| चंद्र | 06/05/2049 | मंग | 25/05/2050 | राहु | 30/04/2051 | गुरु | 08/06/2052 | शनि | 05/06/2053 |

| शुक्र–शुक्र | | शुक्र–सूर्य | | शुक्र–चंद्र | | शुक्र–मंग | | शुक्र–राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **05/06/2053** | | **05/10/2056** | | **05/10/2057** | | **06/06/2059** | | **05/08/2060** | |
| **05/10/2056** | | **05/10/2057** | | **06/06/2059** | | **05/08/2060** | | **06/08/2063** | |
| शुक्र | 25/12/2053 | सूर्य | 23/10/2056 | चंद्र | 25/11/2057 | मंग | 01/07/2059 | राहु | 16/01/2061 |
| सूर्य | 24/02/2054 | चंद्र | 23/11/2056 | मंग | 30/12/2057 | राहु | 03/09/2059 | गुरु | 12/06/2061 |
| चंद्र | 06/06/2054 | मंग | 14/12/2056 | राहु | 01/04/2058 | गुरु | 30/10/2059 | शनि | 02/12/2061 |
| मंग | 16/08/2054 | राहु | 07/02/2057 | गुरु | 21/06/2058 | शनि | 05/01/2060 | बुध | 06/05/2062 |
| राहु | 14/02/2055 | गुरु | 27/03/2057 | शनि | 25/09/2058 | बुध | 05/03/2060 | केतु | 09/07/2062 |
| गुरु | 27/07/2055 | शनि | 24/05/2057 | बुध | 21/12/2058 | केतु | 30/03/2060 | शुक्र | 08/01/2063 |
| शनि | 04/02/2056 | बुध | 15/07/2057 | केतु | 25/01/2059 | शुक्र | 09/06/2060 | सूर्य | 04/03/2063 |
| बुध | 26/07/2056 | केतु | 05/08/2057 | शुक्र | 06/05/2059 | सूर्य | 01/07/2060 | चंद्र | 03/06/2063 |
| केतु | 05/10/2056 | शुक्र | 05/10/2057 | सूर्य | 06/06/2059 | चंद्र | 05/08/2060 | मंग | 06/08/2063 |

| शुक्र–गुरु | | शुक्र–शनि | | शुक्र–बुध | | शुक्र–केतु | | सूर्य–सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **06/08/2063** | | **06/04/2066** | | **05/06/2069** | | **05/04/2072** | | **05/06/2073** | |
| **06/04/2066** | | **05/06/2069** | | **05/04/2072** | | **05/06/2073** | | **23/09/2073** | |
| गुरु | 14/12/2063 | शनि | 06/10/2066 | बुध | 30/10/2069 | केतु | 30/04/2072 | सूर्य | 11/06/2073 |
| शनि | 16/05/2064 | बुध | 19/03/2067 | केतु | 29/12/2069 | शुक्र | 10/07/2072 | चंद्र | 20/06/2073 |
| बुध | 01/10/2064 | केतु | 25/05/2067 | शुक्र | 20/06/2070 | सूर्य | 31/07/2072 | मंग | 26/06/2073 |
| केतु | 27/11/2064 | शुक्र | 04/12/2067 | सूर्य | 11/08/2070 | चंद्र | 05/09/2072 | राहु | 13/07/2073 |
| शुक्र | 08/05/2065 | सूर्य | 31/01/2068 | चंद्र | 05/11/2070 | मंग | 30/09/2072 | गुरु | 27/07/2073 |
| सूर्य | 26/06/2065 | चंद्र | 06/05/2068 | मंग | 04/01/2071 | राहु | 03/12/2072 | शनि | 14/08/2073 |
| चंद्र | 15/09/2065 | मंग | 13/07/2068 | राहु | 08/06/2071 | गुरु | 29/01/2073 | बुध | 29/08/2073 |
| मंग | 11/11/2065 | राहु | 02/01/2069 | गुरु | 24/10/2071 | शनि | 06/04/2073 | केतु | 05/09/2073 |
| राहु | 06/04/2066 | गुरु | 05/06/2069 | शनि | 05/04/2072 | बुध | 05/06/2073 | शुक्र | 23/09/2073 |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# षोडशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : बुध 3 वर्ष 3 मास 1 दिन

| बुध | | शुक्र | | सूर्य | | मंगल | | गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 02/02/1975 | | 05/05/1978 | | 05/05/1996 | | 06/05/2007 | | 06/05/2019 | |
| 05/05/1978 | | 05/05/1996 | | 06/05/2007 | | 06/05/2019 | | 05/05/2032 | |
| | 00/00/0000 | शुक्र | 18/02/1981 | सूर्य | 21/05/1997 | मंग | 01/08/2008 | गुरु | 19/10/2020 |
| | 00/00/0000 | सूर्य | 04/11/1982 | मंग | 10/07/1998 | गुरु | 05/12/2009 | शनि | 15/05/2022 |
| | 00/00/0000 | मंग | 14/09/1984 | गुरु | 04/10/1999 | शनि | 18/05/2011 | केतु | 19/01/2024 |
| | 00/00/0000 | गुरु | 21/09/1986 | शनि | 31/01/2001 | केतु | 05/12/2012 | चंद्र | 04/11/2025 |
| | 00/00/0000 | शनि | 22/11/1988 | केतु | 04/07/2002 | चंद्र | 01/08/2014 | बुध | 01/10/2027 |
| | 02/02/1975 | केतु | 22/03/1991 | चंद्र | 09/01/2004 | बुध | 05/05/2016 | शुक्र | 06/10/2029 |
| केतु | 31/12/1975 | चंद्र | 14/09/1993 | बुध | 20/08/2005 | शुक्र | 16/03/2018 | सूर्य | 31/12/2030 |
| चंद्र | 05/05/1978 | बुध | 05/05/1996 | शुक्र | 06/05/2007 | सूर्य | 06/05/2019 | मंग | 05/05/2032 |

| शनि | | केतु | | चन्द्र | | बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 05/05/2032 | | 05/05/2046 | | 05/05/2061 | | 05/05/2077 | |
| 05/05/2046 | | 05/05/2061 | | 05/05/2077 | | 00/00/0000 | |
| शनि | 12/01/2034 | केतु | 13/04/2048 | चंद्र | 20/07/2063 | बुध | 01/11/2079 |
| केतु | 04/11/2035 | चंद्र | 08/05/2050 | बुध | 23/11/2065 | शुक्र | 22/06/2082 |
| चंद्र | 09/10/2037 | बुध | 19/07/2052 | शुक्र | 17/05/2068 | सूर्य | 31/01/2084 |
| बुध | 29/10/2039 | शुक्र | 17/11/2054 | सूर्य | 23/11/2069 | मंग | 04/11/2085 |
| शुक्र | 30/12/2041 | सूर्य | 19/04/2056 | मंग | 20/07/2071 | गुरु | 01/10/2087 |
| सूर्य | 29/04/2043 | मंग | 07/11/2057 | गुरु | 05/05/2073 | शनि | 19/10/2089 |
| मंग | 09/10/2044 | गुरु | 14/07/2059 | शनि | 10/04/2075 | केतु | 02/02/2091 |
| गुरु | 05/05/2046 | शनि | 05/05/2061 | केतु | 05/05/2077 | | 00/00/0000 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# त्रिभगी दशा

## भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 10 मास 21 दिन

| मंगल | | राहु | | गुरु | | शनि | | बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **02/02/1975** | | **25/12/1975** | | **25/12/1987** | | **25/08/1998** | | **26/04/2011** | |
| **25/12/1975** | | **25/12/1987** | | **25/08/1998** | | **26/04/2011** | | **25/08/2022** | |
| | 00/00/0000 | राहु | 13/10/1977 | गुरु | 28/05/1989 | शनि | 27/08/2000 | बुध | 02/12/2012 |
| | 00/00/0000 | गुरु | 20/05/1979 | शनि | 03/02/1991 | बुध | 13/06/2002 | केतु | 31/07/2013 |
| | 00/00/0000 | शनि | 13/04/1981 | बुध | 08/08/1992 | केतु | 10/03/2003 | शुक्र | 21/06/2015 |
| | 00/00/0000 | बुध | 25/12/1982 | केतु | 24/03/1993 | शुक्र | 19/04/2005 | सूर्य | 14/01/2016 |
| | 00/00/0000 | केतु | 06/09/1983 | शुक्र | 02/01/1995 | सूर्य | 06/12/2005 | चंद्र | 24/12/2016 |
| | 02/02/1975 | शुक्र | 06/09/1985 | सूर्य | 16/07/1995 | चंद्र | 27/12/2006 | मंग | 23/08/2017 |
| शुक्र | 12/05/1975 | सूर्य | 13/04/1986 | चंद्र | 04/06/1996 | मंग | 23/09/2007 | राहु | 06/05/2019 |
| सूर्य | 05/08/1975 | चंद्र | 13/04/1987 | मंग | 18/01/1997 | राहु | 17/08/2009 | गुरु | 08/11/2020 |
| चंद्र | 25/12/1975 | मंग | 25/12/1987 | राहु | 25/08/1998 | गुरु | 26/04/2011 | शनि | 25/08/2022 |

| केतु | | शुक्र | | सूर्य | | चन्द्र | | मंगल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **25/08/2022** | | **26/04/2027** | | **25/08/2040** | | **25/08/2044** | | **26/04/2051** | |
| **26/04/2027** | | **25/08/2040** | | **25/08/2044** | | **26/04/2051** | | **00/00/0000** | |
| केतु | 02/12/2022 | शुक्र | 15/07/2029 | सूर्य | 06/11/2040 | चंद्र | 15/03/2045 | मंग | 03/08/2051 |
| शुक्र | 13/09/2023 | सूर्य | 16/03/2030 | चंद्र | 07/03/2041 | मंग | 05/08/2045 | राहु | 15/04/2052 |
| सूर्य | 07/12/2023 | चंद्र | 26/04/2031 | मंग | 01/06/2041 | राहु | 05/08/2046 | गुरु | 28/11/2052 |
| चंद्र | 27/04/2024 | मंग | 04/02/2032 | राहु | 06/01/2042 | गुरु | 25/06/2047 | शनि | 25/08/2053 |
| मंग | 04/08/2024 | राहु | 03/02/2034 | गुरु | 20/07/2042 | शनि | 15/07/2048 | बुध | 23/04/2054 |
| राहु | 17/04/2025 | गुरु | 14/11/2035 | शनि | 08/03/2043 | बुध | 25/06/2049 | केतु | 01/08/2054 |
| गुरु | 30/11/2025 | शनि | 25/12/2037 | बुध | 01/10/2043 | केतु | 14/11/2049 | शुक्र | 02/02/2055 |
| शनि | 27/08/2026 | बुध | 14/11/2039 | केतु | 25/12/2043 | शुक्र | 25/12/2050 | | 00/00/0000 |
| बुध | 26/04/2027 | केतु | 25/08/2040 | शुक्र | 25/08/2044 | सूर्य | 26/04/2051 | | 00/00/0000 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# अष्टोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : मंगल 4 वर्ष 4 मास 18 दिन

| मंगल | | बुध | | शनि | | गुरु | | राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **02/02/1975** | | **22/06/1979** | | **21/06/1996** | | **21/06/2006** | | **21/06/2025** | |
| **22/06/1979** | | **21/06/1996** | | **21/06/2006** | | **21/06/2025** | | **21/06/2037** | |
| | 00/00/0000 | बुध | 23/02/1982 | शनि | 25/05/1997 | गुरु | 24/10/2009 | राहु | 21/10/2026 |
| | 00/00/0000 | शनि | 21/09/1983 | गुरु | 27/02/1999 | राहु | 04/12/2011 | शुक्र | 19/02/2029 |
| | 02/02/1975 | गुरु | 17/09/1986 | राहु | 07/04/2000 | शुक्र | 15/08/2015 | सूर्य | 21/10/2029 |
| गुरु | 22/06/1975 | राहु | 07/08/1988 | शुक्र | 19/03/2002 | सूर्य | 03/09/2016 | चंद्र | 22/06/2031 |
| राहु | 11/05/1976 | शुक्र | 28/11/1991 | सूर्य | 08/10/2002 | चंद्र | 25/04/2019 | मंग | 11/05/2032 |
| शुक्र | 30/11/1977 | सूर्य | 07/11/1992 | चंद्र | 27/02/2004 | मंग | 20/09/2020 | बुध | 01/04/2034 |
| सूर्य | 12/05/1978 | चंद्र | 19/03/1995 | मंग | 23/11/2004 | बुध | 18/09/2023 | शनि | 12/05/2035 |
| चंद्र | 22/06/1979 | मंग | 21/06/1996 | बुध | 21/06/2006 | शनि | 21/06/2025 | गुरु | 21/06/2037 |

| शुक्र | | सूर्य | | चन्द्र | | मंगल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **21/06/2037** | | **21/06/2058** | | **21/06/2064** | | **22/06/2079** | |
| **21/06/2058** | | **21/06/2064** | | **22/06/2079** | | **00/00/0000** | |
| शुक्र | 22/07/2041 | सूर्य | 21/10/2058 | चंद्र | 22/07/2066 | मंग | 24/01/2080 |
| सूर्य | 21/09/2042 | चंद्र | 22/08/2059 | मंग | 01/09/2067 | बुध | 28/04/2081 |
| चंद्र | 21/08/2045 | मंग | 31/01/2060 | बुध | 10/01/2070 | शनि | 24/01/2082 |
| मंग | 12/03/2047 | बुध | 10/01/2061 | शनि | 01/06/2071 | गुरु | 02/02/2083 |
| बुध | 02/07/2050 | शनि | 01/08/2061 | गुरु | 20/01/2074 | | 00/00/0000 |
| शनि | 11/06/2052 | गुरु | 21/08/2062 | राहु | 21/09/2075 | | 00/00/0000 |
| गुरु | 20/02/2056 | राहु | 22/04/2063 | शुक्र | 21/08/2078 | | 00/00/0000 |
| राहु | 21/06/2058 | शुक्र | 21/06/2064 | सूर्य | 22/06/2079 | | 00/00/0000 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# योगिनी दशा

## भोग्य दशा काल : मंगला 0 वर्ष 2 मास 9 दिन

| मंगला | | पिंगला | | धान्या | | भ्रामरी | | भद्रिका | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **02/02/1975** | | **13/04/1975** | | **12/04/1977** | | **12/04/1980** | | **12/04/1984** | |
| **13/04/1975** | | **12/04/1977** | | **12/04/1980** | | **12/04/1984** | | **12/04/1989** | |
| | 00/00/0000 | पिंग | 23/05/1975 | धांय | 13/07/1977 | भ्राम | 21/09/1980 | भद्रि | 22/12/1984 |
| | 00/00/0000 | धांय | 23/07/1975 | भ्राम | 11/11/1977 | भद्रि | 12/04/1981 | उल्क | 22/10/1985 |
| | 00/00/0000 | भ्राम | 12/10/1975 | भद्रि | 12/04/1978 | उल्क | 12/12/1981 | सिद्ध | 12/10/1986 |
| | 00/00/0000 | भद्रि | 22/01/1976 | उल्क | 12/10/1978 | सिद्ध | 22/09/1982 | संक | 22/11/1987 |
| | 00/00/0000 | उल्क | 23/05/1976 | सिद्ध | 13/05/1979 | संक | 12/08/1983 | मंग | 12/01/1988 |
| | 00/00/0000 | सिद्ध | 12/10/1976 | संक | 12/01/1980 | मंग | 22/09/1983 | पिंग | 22/04/1988 |
| | 02/02/1975 | संक | 23/03/1977 | मंग | 11/02/1980 | पिंग | 12/12/1983 | धांय | 21/09/1988 |
| संक | 13/04/1975 | मंग | 12/04/1977 | पिंग | 12/04/1980 | धांय | 12/04/1984 | भ्राम | 12/04/1989 |

| उल्का | | सिद्धा | | संकटा | | मंगला | | पिंगला | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **12/04/1989** | | **13/04/1995** | | **12/04/2002** | | **12/04/2010** | | **13/04/2011** | |
| **13/04/1995** | | **12/04/2002** | | **12/04/2010** | | **13/04/2011** | | **12/04/2013** | |
| उल्क | 12/04/1990 | सिद्ध | 22/08/1996 | संक | 22/01/2004 | मंग | 23/04/2010 | पिंग | 23/05/2011 |
| सिद्ध | 13/06/1991 | संक | 13/03/1998 | मंग | 12/04/2004 | पिंग | 13/05/2010 | धांय | 23/07/2011 |
| संक | 12/10/1992 | मंग | 23/05/1998 | पिंग | 21/09/2004 | धांय | 12/06/2010 | भ्राम | 12/10/2011 |
| मंग | 11/12/1992 | पिंग | 12/10/1998 | धांय | 23/05/2005 | भ्राम | 23/07/2010 | भद्रि | 22/01/2012 |
| पिंग | 12/04/1993 | धांय | 13/05/1999 | भ्राम | 12/04/2006 | भद्रि | 12/09/2010 | उल्क | 23/05/2012 |
| धांय | 12/10/1993 | भ्राम | 21/02/2000 | भद्रि | 23/05/2007 | उल्क | 12/11/2010 | सिद्ध | 12/10/2012 |
| भ्राम | 12/06/1994 | भद्रि | 10/02/2001 | उल्क | 21/09/2008 | सिद्ध | 22/01/2011 | संक | 23/03/2013 |
| भद्रि | 13/04/1995 | उल्क | 12/04/2002 | सिद्ध | 12/04/2010 | संक | 13/04/2011 | मंग | 12/04/2013 |

**नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–**

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मंगला | : | चन्द्र | पिंगला | : | सूर्य | धान्या | : | गुरु | भ्रामरी | : | मंगल |
| भद्रिका | : | बुध | उल्का | : | शनि | सिद्धा | : | शुक्र | संकटा | : | राहु/केतु |

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# योगिनी दशा

| धान्या | | भ्रामरी | | भद्रिका | | उल्का | | सिद्धा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **12/04/2013** | | **12/04/2016** | | **12/04/2020** | | **12/04/2025** | | **13/04/2031** | |
| **12/04/2016** | | **12/04/2020** | | **12/04/2025** | | **13/04/2031** | | **12/04/2038** | |
| धांय | 13/07/2013 | भ्राम | 21/09/2016 | भद्रि | 22/12/2020 | उल्क | 12/04/2026 | सिद्ध | 22/08/2032 |
| भ्राम | 11/11/2013 | भद्रि | 12/04/2017 | उल्क | 22/10/2021 | सिद्ध | 13/06/2027 | संक | 13/03/2034 |
| भद्रि | 12/04/2014 | उल्क | 12/12/2017 | सिद्ध | 12/10/2022 | संक | 12/10/2028 | मंग | 23/05/2034 |
| उल्क | 12/10/2014 | सिद्ध | 22/09/2018 | संक | 22/11/2023 | मंग | 11/12/2028 | पिंग | 12/10/2034 |
| सिद्ध | 13/05/2015 | संक | 12/08/2019 | मंग | 12/01/2024 | पिंग | 12/04/2029 | धांय | 13/05/2035 |
| संक | 12/01/2016 | मंग | 22/09/2019 | पिंग | 22/04/2024 | धांय | 12/10/2029 | भ्राम | 21/02/2036 |
| मंग | 11/02/2016 | पिंग | 12/12/2019 | धांय | 21/09/2024 | भ्राम | 12/06/2030 | भद्रि | 10/02/2037 |
| पिंग | 12/04/2016 | धांय | 12/04/2020 | भ्राम | 12/04/2025 | भद्रि | 13/04/2031 | उल्क | 12/04/2038 |

| संकटा | | मंगला | | पिंगला | | धान्या | | भ्रामरी | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **12/04/2038** | | **12/04/2046** | | **13/04/2047** | | **12/04/2049** | | **12/04/2052** | |
| **12/04/2046** | | **13/04/2047** | | **12/04/2049** | | **12/04/2052** | | **12/04/2056** | |
| संक | 22/01/2040 | मंग | 23/04/2046 | पिंग | 23/05/2047 | धांय | 13/07/2049 | भ्राम | 21/09/2052 |
| मंग | 12/04/2040 | पिंग | 13/05/2046 | धांय | 23/07/2047 | भ्राम | 11/11/2049 | भद्रि | 12/04/2053 |
| पिंग | 21/09/2040 | धांय | 12/06/2046 | भ्राम | 12/10/2047 | भद्रि | 12/04/2050 | उल्क | 12/12/2053 |
| धांय | 23/05/2041 | भ्राम | 23/07/2046 | भद्रि | 22/01/2048 | उल्क | 12/10/2050 | सिद्ध | 22/09/2054 |
| भ्राम | 12/04/2042 | भद्रि | 12/09/2046 | उल्क | 23/05/2048 | सिद्ध | 13/05/2051 | संक | 12/08/2055 |
| भद्रि | 23/05/2043 | उल्क | 12/11/2046 | सिद्ध | 12/10/2048 | संक | 12/01/2052 | मंग | 22/09/2055 |
| उल्क | 21/09/2044 | सिद्ध | 22/01/2047 | संक | 23/03/2049 | मंग | 11/02/2052 | पिंग | 12/12/2055 |
| सिद्ध | 12/04/2046 | संक | 13/04/2047 | मंग | 12/04/2049 | पिंग | 12/04/2052 | धांय | 12/04/2056 |

| भद्रिका | | उल्का | | सिद्धा | | संकटा | | मंगला | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **12/04/2056** | | **12/04/2061** | | **13/04/2067** | | **12/04/2074** | | **12/04/2082** | |
| **12/04/2061** | | **13/04/2067** | | **12/04/2074** | | **12/04/2082** | | **02/02/2083** | |
| भद्रि | 22/12/2056 | उल्क | 12/04/2062 | सिद्ध | 22/08/2068 | संक | 22/01/2076 | मंग | 23/04/2082 |
| उल्क | 22/10/2057 | सिद्ध | 13/06/2063 | संक | 13/03/2070 | मंग | 12/04/2076 | पिंग | 13/05/2082 |
| सिद्ध | 12/10/2058 | संक | 12/10/2064 | मंग | 23/05/2070 | पिंग | 21/09/2076 | धांय | 12/06/2082 |
| संक | 22/11/2059 | मंग | 11/12/2064 | पिंग | 12/10/2070 | धांय | 23/05/2077 | भ्राम | 23/07/2082 |
| मंग | 12/01/2060 | पिंग | 12/04/2065 | धांय | 13/05/2071 | भ्राम | 12/04/2078 | भद्रि | 12/09/2082 |
| पिंग | 22/04/2060 | धांय | 12/10/2065 | भ्राम | 21/02/2072 | भद्रि | 23/05/2079 | उल्क | 12/11/2082 |
| धांय | 21/09/2060 | भ्राम | 12/06/2066 | भद्रि | 10/02/2073 | उल्क | 21/09/2080 | सिद्ध | 22/01/2083 |
| भ्राम | 12/04/2061 | भद्रि | 13/04/2067 | उल्क | 12/04/2074 | सिद्ध | 12/04/2082 | संक | 02/02/2083 |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# चर दशा

## भोग्य दशा काल : मकर 7 वर्ष 0 मास 0 दिन

| मकर | | धनु | | वृश्चिक | | तुला | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 02/02/1975 | | 02/02/1982 | | 02/02/1984 | | 01/02/1985 | |
| 02/02/1982 | | 02/02/1984 | | 01/02/1985 | | 01/02/1989 | |
| धनु | 03/09/1975 | वृश्चि | 03/04/1982 | तुला | 03/03/1984 | वृश्चि | 03/06/1985 |
| वृश्चि | 03/04/1976 | तुला | 03/06/1982 | कन्या | 03/04/1984 | धनु | 03/10/1985 |
| तुला | 02/11/1976 | कन्या | 03/08/1982 | सिंह | 03/05/1984 | मक | 02/02/1986 |
| कन्या | 03/06/1977 | सिंह | 03/10/1982 | कर्क | 03/06/1984 | कुंभ | 03/06/1986 |
| सिंह | 02/01/1978 | कर्क | 03/12/1982 | मिथु | 03/07/1984 | मीन | 03/10/1986 |
| कर्क | 03/08/1978 | मिथु | 02/02/1983 | वृष | 03/08/1984 | मेष | 02/02/1987 |
| मिथु | 04/03/1979 | वृष | 04/04/1983 | मेष | 02/09/1984 | वृष | 04/06/1987 |
| वृष | 03/10/1979 | मेष | 04/06/1983 | मीन | 03/10/1984 | मिथु | 03/10/1987 |
| मेष | 03/05/1980 | मीन | 03/08/1983 | कुंभ | 02/11/1984 | कर्क | 02/02/1988 |
| मीन | 02/12/1980 | कुंभ | 03/10/1983 | मक | 02/12/1984 | सिंह | 03/06/1988 |
| कुंभ | 03/07/1981 | मक | 03/12/1983 | धनु | 02/01/1985 | कन्या | 03/10/1988 |
| मक | 02/02/1982 | धनु | 02/02/1984 | वृश्चि | 01/02/1985 | तुला | 01/02/1989 |

| कन्या | | सिंह | | कर्क | | मिथुन | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01/02/1989 | | 02/02/1996 | | 02/02/2003 | | 02/02/2012 | |
| 02/02/1996 | | 02/02/2003 | | 02/02/2012 | | 02/02/2020 | |
| तुला | 02/09/1989 | कन्या | 02/09/1996 | मिथु | 03/11/2003 | वृष | 03/10/2012 |
| वृश्चि | 03/04/1990 | तुला | 03/04/1997 | वृष | 03/08/2004 | मेष | 03/06/2013 |
| धनु | 02/11/1990 | वृश्चि | 02/11/1997 | मेष | 04/05/2005 | मीन | 02/02/2014 |
| मक | 04/06/1991 | धनु | 03/06/1998 | मीन | 02/02/2006 | कुंभ | 03/10/2014 |
| कुंभ | 03/01/1992 | मक | 02/01/1999 | कुंभ | 02/11/2006 | मक | 04/06/2015 |
| मीन | 03/08/1992 | कुंभ | 03/08/1999 | मक | 03/08/2007 | धनु | 02/02/2016 |
| मेष | 04/03/1993 | मीन | 03/03/2000 | धनु | 03/05/2008 | वृश्चि | 03/10/2016 |
| वृष | 03/10/1993 | मेष | 03/10/2000 | वृश्चि | 01/02/2009 | तुला | 03/06/2017 |
| मिथु | 04/05/1994 | वृष | 04/05/2001 | तुला | 02/11/2009 | कन्या | 02/02/2018 |
| कर्क | 03/12/1994 | मिथु | 03/12/2001 | कन्या | 03/08/2010 | सिंह | 03/10/2018 |
| सिंह | 04/07/1995 | कर्क | 04/07/2002 | सिंह | 04/05/2011 | कर्क | 04/06/2019 |
| कन्या | 02/02/1996 | सिंह | 02/02/2003 | कर्क | 02/02/2012 | मिथु | 02/02/2020 |

| वृष | | मेष | | मीन | | कुम्भ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 02/02/2020 | | 01/02/2029 | | 01/02/2037 | | 02/02/2038 | |
| 01/02/2029 | | 01/02/2037 | | 02/02/2038 | | 02/02/2046 | |
| मेष | 02/11/2020 | वृष | 03/10/2029 | मेष | 04/03/2037 | मीन | 03/10/2038 |
| मीन | 03/08/2021 | मिथु | 03/06/2030 | वृष | 03/04/2037 | मेष | 04/06/2039 |
| कुंभ | 04/05/2022 | कर्क | 02/02/2031 | मिथु | 04/05/2037 | वृष | 02/02/2040 |
| मक | 02/02/2023 | सिंह | 03/10/2031 | कर्क | 03/06/2037 | मिथु | 03/10/2040 |
| धनु | 03/11/2023 | कन्या | 03/06/2032 | सिंह | 03/07/2037 | कर्क | 03/06/2041 |
| वृश्चि | 03/08/2024 | तुला | 01/02/2033 | कन्या | 03/08/2037 | सिंह | 02/02/2042 |
| तुला | 04/05/2025 | वृश्चि | 03/10/2033 | तुला | 02/09/2037 | कन्या | 03/10/2042 |
| कन्या | 02/02/2026 | धनु | 03/06/2034 | वृश्चि | 03/10/2037 | तुला | 04/06/2043 |
| सिंह | 02/11/2026 | मक | 02/02/2035 | धनु | 02/11/2037 | वृश्चि | 02/02/2044 |
| कर्क | 03/08/2027 | कुंभ | 03/10/2035 | मक | 03/12/2037 | धनु | 03/10/2044 |
| मिथु | 03/05/2028 | मीन | 03/06/2036 | कुंभ | 02/01/2038 | मक | 03/06/2045 |
| वृष | 01/02/2029 | मेष | 01/02/2037 | मीन | 02/02/2038 | कुंभ | 02/02/2046 |

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती ह। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|---|---|
| मूलांक | 2 |
| भाग्यांक | 8 |
| मित्र अंक | 2, 7, 8 |
| शत्रु अंक | 4, 5, 6 |
| शुभ वर्ष | 20,29,38,47,56 |
| शुभ दिन | शुक्र, शनि, बुध |
| शुभ ग्रह | शुक्र, शनि, बुध |
| मित्र राशि | मकर, मिथुन |
| मित्र लग्न | मेष, कन्या, वृश्चिक |
| अनुकूल देवता | लक्ष्मी |
| शुभ रत्न | नीलम |
| शुभ उपरत्न | लाजवर्त, मरगज |
| भाग्य रत्न | पन्ना |
| शुभ धातु | लौह |
| शुभ रंग | काला |
| शुभ दिशा | पश्चिम |
| शुभ समय | संध्या |
| दान पदार्थ | कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह |
| दान अन्न | उड़द |
| दान द्रव्य | तेल |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सौंपकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है। सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| जीवन रत्नः | नीलम | शत्रु व रोग मुक्ति,स्वास्थ्य,धन |
| भाग्य रत्नः | पन्ना | धन,शत्रु व रोग मुक्ति,भाग्योदय |
| कारक रत्नः | हीरा | धन,सन्तति सुख,व्यावसायिक उन्नति |

| **दशा** | **रत्न** | **क्षमता** | **मंत्र–जप / व्रत / दान / लाभ** |
|---|---|---|---|
| मंगल | हीरा | 76% | ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000) |
| 02/02/1975 | नीलम | 69% | मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी |
| 05/06/1976 | पन्ना | 49% | कम खर्च, सुख, धनार्जन |
| राहु | हीरा | 77% | ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000) |
| 05/06/1976 | नीलम | 76% | शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल |
| 06/06/1994 | पन्ना | 51% | धनार्जन, सुख, धनार्जन |
| गुरु | हीरा | 79% | ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000) |
| 06/06/1994 | नीलम | 64% | गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, घी |
| 06/06/2010 | पन्ना | 56% | धन, कम खर्च, पराक्रम |
| शनि | नीलम | 86% | ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000) |
| 06/06/2010 | हीरा | 77% | शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल |
| 05/06/2029 | पन्ना | 55% | शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य, धन |
| बुध | हीरा | 86% | ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000) |
| 05/06/2029 | पन्ना | 73% | बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी |
| 06/06/2046 | नीलम | 64% | धन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय |
| केतु | हीरा | 77% | ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000) |
| 06/06/2046 | नीलम | 66% | मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल |
| 05/06/2053 | पन्ना | 51% | सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय |
| शुक्र | हीरा | 96% | ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000) |
| 05/06/2053 | नीलम | 67% | शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, घी |
| 05/06/2073 | पन्ना | 63% | धन, सन्तति सुख, भाग्योदय |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# भाग्य रत्न

आपका शुभ रत्न –लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान–सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है । लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ–साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र – ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान–सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में ध ारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी ध ारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

| रत्न | रत्ती | धातु | अंगुली | दिन | समय | ग्रह | नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माणिक्य | 4 | सोना | अना | रविवार | सुबह | सूर्य | कृतिका, उ0फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा |
| मोती | 4 | चांदी | कनि | सोमवार | सुबह | चन्द्र | रोहिणी, हस्त, श्रवण |
| मूंगा | 6 | चांदी | अना | मंगलवार | सुबह | मंगल | मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा |
| पन्ना | 4 | सोना | कनि | बुधवार | सुबह | बुध | आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती |
| पुखराज | 4 | सोना | तर्जन | गुरुवार | सुबह | गुरु | पुनर्वसु, विशाखा, पू0भाद्रपद |
| हीरा | 1 | प्लेटि | कनि | शुक्रवार | सुबह | शुक्र | भरणी, पू0फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा |
| नीलम | 4 | पंचधातु | मध्य | शनिवार | शाम | शनि | पुष्य, अनुराधा, उ0भाद्रपद |
| गोमेद | 5 | अष्टधातु | मध्य | शनिवार | रात्रि | राहु | आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा |
| लहसुनिया | 6 | चांदी | अना | गुरुवार | रात्रि | केतु | अश्विनी, मघा, मूल |

| रत्न | मंत्र | निषेध रत्न | दान पदार्थ |
|---|---|---|---|
| माणिक्य | ऊँ घृणि सूर्याय नमः | हीरा, नीलम, गोमेद | गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र |
| मोती | ऊँ सों सोमाय नमः | गोमेद | चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र |
| मूंगा | ऊँ अं अंगारकाय नमः | हीरा, गोमेद, नीलम | गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र |
| पन्ना | ऊँ बुं बुधाय नमः | ... | मूंग,कांसा,हरित वस्त्र |
| पुखराज | ऊँ वृं वृहस्पतये नमः | हीरा, गोमेद | चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र |
| हीरा | ऊँ शुं शुक्राय नमः | माणिक्य, मूंगा, पुखराज | चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र |
| नीलम | ऊँ शं शनैश्चराय नमः | माणिक्य, मूंगा, पुखराज | काला तिल,तेल,काला वस्त्र |
| गोमेद | ऊँ रां राहवे नमः | माणिक्य, मोती, मूंगा | तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र |
| लहसुनिया | ऊँ कें केतवे नमः | ... | सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है । शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

### प्रथम चक्रः

| | |
|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 01/11/1979-05/10/1982 |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 05/10/1982-21/12/1984 |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 21/12/1984-16/12/1987 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 20/03/1990-06/03/1993 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 05/06/2000-22/07/2002 |

### द्वितीय चक्रः

| | |
|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 09/09/2009-15/11/2011 |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 15/11/2011-02/11/2014 |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 02/11/2014-19/01/2017 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 18/01/2020-21/07/2022 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 11/04/2030-25/05/2032 |

### तृतीय चक्रः

| | |
|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 29/06/2039-06/03/2041 |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 06/03/2041-02/12/2043 |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 02/12/2043-29/11/2046 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 20/07/2049-17/02/2052 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 22/05/2059-05/07/2061 |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | सम | भाग्योदय |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | शुभ | व्यावसायिक उन्नति |
| साढेसाती तृतीय ढैया | अशुभ | अल्प बचत |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | शुभ | स्वास्थ्य |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | शुभ | सन्तति सुख |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपमुा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उमुद की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न–भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

## योग कारक एवं मारक

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लग्न के लिए | : | योग कारक | - | शुक्र, शनि, चंद्र |
| | | मारक | - | सूर्य, मंग, गुरु |
| जन्मकुंडली के लिए | : | योग कारक | - | केतु, सूर्य, चंद्र |
| | | मारक | - | राहु, मंग, गुरु |

## जन्मकुंडली में ग्रह बल

| | | |
|---|---|---|
| सूर्य | 58% | स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव |
| चन्द्र | 54% | व्यावसायिक उन्नति, दम्पति |
| मंगल | 37% | कम खर्च, सुख, धनार्जन |
| बुध | 43% | धन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय |
| गुरु | 42% | धन, कम खर्च, पराक्रम |
| शुक्र | 50% | धन, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति |
| शनि | 51% | शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य, धन |
| राहु | 29% | धनार्जन, कम खर्च |
| केतु | 58% | सन्तति सुख, धन |

## दशा काल में ग्रह बल

| दशा | समाप्ति | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मंगल | 05/06/1976 | 60 | 58 | 81 | 27 | 52 | 43 | 44 | 20 | 60 |
| राहु | 06/06/1994 | 35 | 33 | 24 | 52 | 52 | 68 | 56 | 77 | 35 |
| गुरु | 06/06/2010 | 60 | 74 | 49 | 59 | 83 | 62 | 60 | 47 | 60 |
| शनि | 05/06/2029 | 35 | 49 | 24 | 69 | 56 | 72 | 88 | 45 | 35 |
| बुध | 06/06/2046 | 60 | 49 | 37 | 84 | 71 | 87 | 60 | 47 | 60 |
| केतु | 05/06/2053 | 51 | 33 | 49 | 54 | 53 | 70 | 31 | 20 | 91 |
| शुक्र | 05/06/2073 | 35 | 49 | 37 | 84 | 71 | 87 | 73 | 59 | 72 |
| सूर्य | 06/06/2079 | 91 | 72 | 49 | 40 | 52 | 31 | 31 | 20 | 51 |
| चन्द्र | 05/06/2089 | 72 | 89 | 37 | 69 | 56 | 60 | 60 | 20 | 35 |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले  जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

**********

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति जन्म कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्ययशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही आप अधिकांश व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही विवाह के पश्चात भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रेम पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में समस्त आवश्यक सुख संसाधनों तथा अन्य भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे। आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा अतः इनसे आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा रुचिशील रहेंगे तथा समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में सफल रहेंगे। इसकी तृतीय भाव पर दृष्टि से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होगी तथा आप निर्भय होकर अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। लोगों में अपना प्रभाव स्थापित करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगे। जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। षष्ठ भाव पर दृष्टि होने से शत्रु पक्ष प्रायः निर्बल रहेगा। आपका विरोध करने में वे सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ ही रहेगी। इससे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भी समावेश होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी तथा आपके परस्पर संबंध भी घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com  astrojayant@gmail.com

रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा एवं अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याओं का प्रायः अभाव रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, ध नैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में पूर्ण यश प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली मिलान के समय यदि कन्या के द्वादश भाव में मंगल हो तो आवश्यक होने पर ही विवाह करें क्योंकि समान भावों में मंगल होने से जीवन में यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में स्थित मंगल होने से दोष समाप्त हो जायेगा एवं जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। अतः अन्तिम निर्णय अत्यन्त ही सूझ बूझ से लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# नक्षत्रफल

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मृग, नाड़ी मध्य, योनि व्याघ्र तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "रि" या "री" अक्षर से शुरू होगा।

आप स्वभाव से ही धर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा रखेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा तथा आप समय समय पर इनका पूजन तथा सत्कार करते रहेंगे। आप स्त्री पुत्र सहित हमेशा सन्तुष्ट रहने वाली प्रकृति के पुरूष होंगे। अनावश्यक इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। आप हमेशा धनधान्य तथा ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

**पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।**
**देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।**
**मानसागरी**

आप हमेशा विभिन्न प्रकार की वेशभूषा को धारण करने के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा गले में भी माला आदि को धारण करेंगे। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर तथा आकर्षक होगी एवं शरीर भी सौन्दर्य से युक्त रहेगा।

**चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।**
**बृहज्जातकम्**

आप अपने मन के किसी भी भेद को हमेशा अपने ही हृदय में गुप्त रखेंगे तथा किसी अन्यजन को उस के बारे में कुछ भी नहीं बताएंगे। आपकी यह प्रवृति स्वाभाविक होगी तथा आजीवन इस प्रवृति का पालन करेंगे। समाज के लोगों में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा अतः सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका अन्य जनों के प्रति भी अनुराग का भाव रहेगा तथा उनसे मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

**चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।**
**जातकपरिजातः**

आप अत्यन्त ही पराक्रमी एवं प्रतापी पुरूष होंगे तथा अपने पराक्रम से शत्रुओं को पराजित करने तथा कुचलने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। शत्रुपक्ष आपसे इतना भयभीत रहेगा कि आपके विरूद्ध मुहं खोलने का उनमें साहस नहीं रहेगा। नीति शास्त्र के आप महान विद्वान होंगे तथा नीति संबंधी कार्यों को सम्पन्न करने में अत्यन्त ही निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। शास्त्रों के प्रति भी आपका सम्मान का भाव रहेगा तथा अपनी अद्भुत बुद्धि से सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञानार्जन में आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

**प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।**
**प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।**
**जातकाभरणम्**



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आपका शरीर तथा मुख देखने में सुन्दर रहेगा। आपकी आखें बड़ी तथा नाक ऊँची होगी। आपके पास वाहनों की बहुलता रहेगी। स्त्री वर्ग के प्रति आपमें आकर्षण की प्रबलता रहेगी तथा इनसे आपके घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे। आपको वाहन के अतिरिक्त भूमि आदि जायदाद से भी बल एवं लाभ प्राप्त होगा। शुद्धता तथा पवित्रता के प्रति आप का विशेष ध्यान रहेगा। आप पराक्रम के ज्ञाता होंगे तथा सम्पूर्ण समाज में आपका उच्च प्रभाव एवं आकर्षण रहेगा। कार्यों को सम्पन्न करने में आप अत्यन्त ही चतुर एवं कुशल होंगे। ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपके मन में गहरी श्रद्धा होगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी भक्ति में सदैव तत्पर रहेंगे। आप अतुल ध ान तथा ऐश्वर्य से हमेशा सुशोभित रहेंगे। इनका आपके पास अभाव नहीं रहेगा। स्त्री से आप हमेशा पराजित रहेंगे तथा अधिकांश कार्य उसी के निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। धन धान्यादि के संग्रह करने में भी आपकी प्रवृति संलग्न रहेगी तथा भाई बन्धुओं का आप उपकार करते रहेंगे।

**उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।**
**गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।**
**भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।**
**धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।**
**सारावली**

आप श्रेष्ठ एवं भद्र पुरूषों तथा समाज सेवा के कार्य में सदा तत्पर रहेंगे तथा विद्धता एवं पवित्रता से हमेशा सुशोभित रहेंगे। भ्रमण करना तथा यात्राएं आदि के प्रति आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अपना अधिकांश समय इन्हीं पर व्यतीत करेंगे। वस्तुओं को खरीदने तथा बेचने के कार्य में आप हमेशा निपुण रहेंगे। आप अपने समस्त बन्धु वर्ग का उपकार एवं सहायता करेंगे परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपकी उपेक्षा होगा।

**देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।**
**प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोऽर्थान्वितः।।**
**हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।**
**बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।**



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

**बृहज्जातकम्**

आप में धैर्य का गुण विद्यमान रहेगा तथा अधिकांश कार्यो को आप धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक न्यायप्रिय व्यक्ति होगे तथा न्याय के प्रति पूर्ण आस्था रखेंगे। आपकी इस प्रवृति को ध्यान में रखते हुए अन्य लोग अपने आपसी विवादों में आपको पंच या मध्यस्थ नियुक्त करेंगे। साथ ही आपका भाग्योदय भी देर से होगा एवं संतति संख्या भी अल्प ही रहेगी।

**चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।**
**प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।**
**फलदीपिका**

आपका कद मध्यम रहेगा। उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में अतीव चतुराई का प्रदर्शन करेंगे एवं उनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही बंधुवर्ग को आप हमेशा कुछ न कुछ सहायता प्रदान करते रहेंगे। परन्तु कभी कभी आप अधिक तथा व्यर्थ की बातें भी बोलने लगेगे। अतः लोगों पर आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। ज्योतिषशास्त्र अथवा ग्रहनक्षत्र विद्या के आप प्रसिद्ध विद्वान हो सकते है। इसके अतिरिक्त संबंधी बन्धु तथा सेवकों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा।

**भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।**
**जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।**
**अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।**
**भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।**
**जातक दीपिका**

यदा कदा आप गलत स्थान पर या अनुचित समय पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे। जिससे आप दुःख को प्राप्त करेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे जिससे अन्य लोगों के ऊपर आपके प्रभाव की वृद्धि होगी। साथ ही आप एक दयालु तथा कृपालु व्यक्ति होंगे तथा सबके प्रति अपनी इस भावना को बनाए रखेंगे। आपकी आखें चंचलता से युक्त रहेंगी। धनागमन आपके पास अस्थिर मात्रा में रहेगा। कभी तो अतिशय धन प्राप्ति होगी तो कभी कुछ नहीं मिलेगा। अतः इससे आप मानसिक रूप से अशान्ति की अनुभूति करेंगे। घर के अन्दर आप बलशाली होंगे परन्तु घर से बाहर अत्यन्त ही कमजोर महसूस करेंगे। मित्र वर्ग से आपका पूर्ण सहयोग तथा प्रेम का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप घर से दूर परदेश या विदेश में भी निवास कर सकते हैं।

**अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।**
**चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।**
**वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।**
**प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।**
**मानसागरी**



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

आप अपने जीवन में वाहनादि से सदैव सम्पूर्ण रहेंगे तथा दानशीलता का भाव भी आपके मन में सर्वथा विद्यमान रहेगा। स्त्रीवर्ग से आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा मित्र एवं बंधु वर्ग के भी स्नेही होंगे।

**वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।**
**शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।**
**जातकाभरणम्**

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रकृति कभी कभी अधिक बातों को कहने की होगी। आपके हृदय में दया एवं करूणा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा। आप एक साहसी पुरूष होंगेतथा साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति शीघ्र ही छोटी छोटी बातों में क्रोधित होने की भी रहेगी। आप अपनी कार्य सिद्धि के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे। शारीरिक बल से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। साथ ही अन्य जनों से कभी कभी आपकी विवाद की प्रवृति भी रहेगी तथा लोगों से आपका विरोध भी रहेगा। अतः संयम पूर्वक अन्य जनों से सम्पर्क करना चाहिए।

आप प्रमेह तथा उन्माद रोग से भी जीवन काल में पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही आपकी मुखाकृति भी सामान्य आकर्षक रहेगी। आप अपनी भाषा में कभी कभी ऐसे शब्दों का उपयोग करेंगे जिससे सुनने वाला आपसे अप्रसन्नता का भाव प्रकट करेगा। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

**अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।**
**दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।**
**जातकभरणम्**

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अपने समस्त कार्यों को स्वच्छन्द तथा स्वतंत्रतापूर्वक सम्पन्न करने के प्रति रूचिशील रहेंगे अपने कार्यो में दूसरों का हस्तक्षेप आपको रूचिकर नहीं लगेगा। साथ ही धनधान्यादि संग्रह करने में भी आपकी प्रवृति रहेगी। अच्छी बातों तथा गुणों को आप शीघ्र ही ग्रहण करेंगे। धन तथा वैभव से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे परन्तु आप अपने ही मुहं से अपनी प्रशंसा करेंगे अतः अन्य जन इसे पसन्द नहीं करेंगे।

**स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।**
**आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।**
**मानसागरी**

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सु खसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रूग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दाता होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए ।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता इत्यादि अन्य अशुभ फल हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के उपवास रखने चाहिए।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

साथ ही सोना, चांदी, हीरा, चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, दूध आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में भी न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न कराने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

**ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**
**मंत्र– ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।**

# शारीरिक गठन, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते है फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शो पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्विन्दयों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपकी कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रूचिशील होंगे फलतः समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपकी इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा सु ख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा बुराइयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पंसद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यो को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन, लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा स्मृति भी तीव्र होगी एवं गहन से गहन विषय को भी स्मरण रखने में समर्थ रहेंगे। आप दर्शन शास्त्र, विज्ञान में उच्चशिक्षा या शोध कार्य के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा इस क्षेत्र में यत्नपूर्वक सफलताएं अर्जित करते रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके प्रति वे आज्ञाकारी कर्तव्य परायण तथा सहानुभूति से युक्त रहेंगे तथा उन्नति के क्षेत्र में आपका परस्पर सहयोग रहेगा। लेकिन यदा कदा वैचारिक मतभेद हो सकता है फिर भी पारिवारिक शान्ति एवं प्रसन्नता के लिए एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आपमें नेतृत्व के गुण विद्यमान रहेंगे अतः सामाजिक मान सम्मान तथा ख्याति समय समय पर प्राप्त होती रहेगी। साथ ही परिवार का स्तर बढ़ाने में भी प्रयत्नशील रहेंगे। आप में संगठन शक्ति भी रहेगी तथा किसी भी कार्य को लाभदायक देखकर आप तुरंत ही उस कार्य को करने के लिए तत्पर हो जाएंगे तथा भौतिकता की प्राप्ति के लिए किसी भी वस्तु का सदुपयोग करने में समर्थ रहेंगे। संचार साधन टेलीफोन, टेलीविजन या वाहन आदि से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही संगीत के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा कला में भी रिक्त समय प्रदान करेंगे। साथ ही दूर समीप की यात्राओं से आपको लाभ प्राप्त होता रहेगा। आप धार्मिक, सूचना संबंधी लेख या अच्छी पुस्तकों को पढ़ने के शौकीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप धनवान, पुण्यात्मा, अतिथि सेवक तथा सर्वजनों के प्रिय होकर सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# माता, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, जायदाद एवं शिक्षा

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। आप सांसारिक सुखों को अर्जित करेने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति है। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल समत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख–सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगे। आपका घ ार किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करनें में समर्थ होंगे परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# बुद्धि, सन्तान एवं प्रणय सम्बन्ध

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी। जिससे आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी बुद्धि के द्वारा शीघ्र कर देंगे। अतः अन्य लोग भी आपकी बुद्धि मता से प्रभावित होंगे तथा वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरात्तव के क्षेत्र में आपका प्रबल आकर्षण एवं रूचि रखेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इन क्षेत्रों के ज्ञानार्जन में प्रयत्न शील होंगे तथा किसी नवीन सिद्धांत का भी प्रतिपादन कर सकते हैं जिससे आपके सामाजिक सम्मान में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में वृष राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम–प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी तथा ऐसे सम्बन्धों से आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी। प्रेम के क्षेत्र में भावनात्मक आकर्षण की प्रबलता होगी। आपका प्रेम मर्यादा, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि –कोण से युक्त होगा। अतः इसकी परिणीति विवाह के रूप में भी हो सकती है जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति प्राप्त होगी तथा संतति में कन्याओं की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगी। माता–पिता के प्रति उनके मन सामान्यतया आदर एवं सम्मान का भाव होगा परन्तु स्वतन्त्र प्रवृति के होने के कारण यदा–कदा वे किसी महत्वपूर्ण कार्य को बिना माता–पिता की सलाह या सहयोग से भी सम्पन्न कर सकते है लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए तथा उनकी योग्यता पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए। इससे आपकी सम्बन्धों में विश्वास, सदभाव एवं मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त वे वृद्धावस्था में आपकी श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इस प्रकार संतति पक्ष से सामान्यतया सुख एवं सहयोग ही अर्जित करेंगे तथा उनसे सन्तुष्टि भी बनी रहेगी।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं परिश्रमी होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक शिक्षा के क्षेत्र में वांछित उन्नति प्राप्त करके अपने उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा–दीक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इसके अतिरिक्त आपकी संतति पराक्रमी तेजस्वी एवं व्यवहार कुशल भी होगी तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य समाजिक जनों को भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ होगी फलतः सभी लोग उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। अतः बच्चों की उन्नति से आप सन्तुष्ट होंगे।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप को रक्त सम्बन्धियों तथा घनिष्ट मित्रों से विरोध का सामना करना पड़ेगा। आपके शत्रु वर्ग उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति भी होंगे तथा समाज में कई क्षेत्रों में आपके शत्रु या विरोधी विद्यमान रहेंगे। वे आपकी प्रसिद्धि को पसन्द नहीं करेंगे तथा आपकी वैभवशालीनता को देखकर मन में ईर्ष्या का भाव रखेंगे। साथ ही वे समाज में मान हानि तथा अन्य प्रकार से आर्थिक हानि करने के लिए तत्पर रहेंगे। परन्तु आप एक बुद्धिमान चतुर प्रतिभाशाली तथा ईमानदार व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्यकलापों से शत्रु एवं विरोधी पक्ष को पराजित करने में समर्थ रहेंगे तथा अपनी समस्याओं तथा परेशानियों का समाधान करेंगे।

आप दीवानी तथा फौजदारी मुकद्दमों में भी लिप्त रहेंगे। इस कार्य को आपको चतुराई से करना चाहिए अन्यथा आर्थिक हानि की संभावना रहेगी। चूँकि आप अपने ही तरीके से किसी भी कार्य को क्रियान्वित करते है तथा दूसरों को इसमें कोई महत्व नहीं देंगे तथापि अन्त में आपको इनमें सफलता मिलेगी तथा ख्याति भी अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपके सेवक अच्छे होंगे तथा आपकी ईमानदारी से सेवा करेंगे साथ ही आपके आज्ञाकारी भी होंगे लेकिन यदा कदा वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य लोगों के समक्ष उजागर करेंगे जिससे आपकी मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः सेवक वर्ग के सम्मुख व्यक्तिगत मतभेदों को गुप्त ही रखें क्योंकि वे उनकी प्रवृत्ति बातूनी होगी। साथ ही नौकरों की पहुँच से कीमती सामान भी दूर रखें।

कई बार आप भौतिक उपकरणों तथा आराम पर अनावश्यक रूप से अधिक व्यय कर देंगे फलतः आपको ऋण आदि लेना पड़ेगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए। आपके मामा मामी तथा अन्य संबन्धी आपके लिए अनुकूल रहेंगे। आपकी मामी क्रोधी स्वभाव की होंगी तथा सामान्यतया अस्वस्थ रहेंगी। लेकिन मामा से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपको वे आवश्यकतानुसार इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। वृद्धावस्था में चिन्ता या रक्त चाप संबन्धी परेशानी भी हो सकती है अतः युवास्था से ही खान पान पर नियंत्रण रखना चाहिए।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# दम्पति, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धि मान एवं धनाढय होता है। वह सौम्य तथा कर्तव्य परायणता के भाव से युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील एवं शांत स्वभाव की होंगी। उनके अधिकांश कार्य कलाप पराक्रम एवं बुद्विमता से सम्पन्न होंगे। तथा अपने बुद्विमता पूर्ण कार्यो से वे अन्य जनों को प्रभावित करेंगी उनकी प्रवृति स्वाभिमानी होगी। परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंग एवं प्रत्यंग पुष्ट रहेंगे जिससे सौन्दर्य दर्शनीय होगा एवं व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। भौतिकता के प्रति उनका लगाव होगा तथा पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति में भी उनका रूझान रहेगा एवं कला के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा आप प्रेम विवाह भी कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा आकर्षण रहेगा। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्विमान होंगे तथा सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सलाह से पूर्ण करेंगे जिससे परस्पर विश्वास प्रेम एवं आकर्षण का भाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से उनकी स्थिति सुदृढ होगी। प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी उपहार स्वरूप बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण प्राप्त होंगे। सास ससुर से आपके संबध सामान्य ही रहेंगे तथा दोनों ओर से औपचारिकताएं रहेंगी तथापि एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा तथा समयानुसार एक दूसरे को नैतिक या अन्य रूप से सहयोग के लिए तत्पर होंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे एवं उन्हें पूर्ण सम्मान तथा सहयोग देंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रश्स्त रहेंगे।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# दहेज, बीमा आयु एवं दुर्घटना

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म या ज्योतिष आदि विषयों में श्रद्धा रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही इन विषयों में शोध कार्य करने के लिए भी तत्पर होंगे फलतः इस क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सफलता प्राप्त होगी एवं आपका अधिक से अधिक समय इस पर व्यतीत होगा। आपके पास अपनी सम्पत्ति रहेगी तथा पैतृक सम्पत्ति भी प्राप्त होगी। अतः आपके पास विस्तृत भूमि तथा कई आवास स्थल हो सकते हैं। साथ ही जमीन जायदाद संबन्धी कार्य से आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी हो सकता है। इस प्रकार चल अचल सम्पत्ति के स्वामी होकर समाज में आप आदरणीय समझें जाएंगे।

यद्यपि शादी के समय स्वयं किसी प्रकार के दहेज की मांग नहीं करेंगे परन्तु आपके ससुराल के लोग आपसे अत्यंत प्रभावित रहेंगे तथा आपको कुछ न कुछ धन उपहार स्वरूप आभूषण आदि अन्य बहुमूल्य वस्तुएं भेंट करेंगे जो आप मना नहीं कर पाएंगे। यह दहेज आपके दाम्पत्य जीवन के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगा। साथ ही बीमा आदि से भी आपको समय समय पर न्यूनाधिक मात्रा में लाभ होता रहेगा। अतः आप अपना तथा अपनी बहुमूल्य वस्तुओं का बीमा कर सकते हैं। यह बीमा आपका सुरक्षित पूंजी निवेश होगा तथा इससे आपको उचित लाभ मिलेगा। आपकी कुंडली में कोई विशेष चोरी या दुर्घटना का योग नहीं है लेकिन यदि कोई ऐसी घटना होती है तो उससे कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आदर्श एवं दयालु प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा पारिवारिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों का पालन करेंगे। साथ ही ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण विश्वास रहेगा। धार्मिक प्रवृतियों का भी अनुपालन करेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में मन्दिर या तीर्थ स्थानों में जाएंगे। आप उपवास आदि भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। धर्म गुरूओं एवं महात्माओं का आप हार्दिक सत्कार करेंगे तथा धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने में भी तत्पर रहेंगे।

आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी। अतः भविष्य वाणियां करने में भी आप समर्थ हो सकते हैं। आप आध्यात्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए तत्पर रहेंगे। आध्यात्मिक उद्देश्य के लिए आप सामूहिक रूप से लोगों को संबोधित करेंगे तथा इसमें आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही भजन कीर्तन या अन्य कार्यकलापों को भी सम्पन्न करेंगे।आपकी व्यक्तिगत कार्यो की सिद्धि तथा इच्छित लाभार्जन के लिए लम्बी दूरी की यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा अपने धर्म के पवित्र ग्रंथों का भी अध्ययन करेंगे। आपकी प्रवृति उदार रहेगी तथा दीन दुःखियों की सेवा कार्य करने में तत्पर रहेंगे तथा दान आदि कार्य भी सम्पन्न करेंगे परन्तु ये सब कार्य आप धन की अपेक्षा तन मन से करना अधिक पंसद करेंगे। आपको पौत्र सुख प्राप्त होगा तथा वे आपको अपना पूर्ण सहयोग तथा सुख प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अपना दैनिक पूजन नित्य सम्पन्न करेंगे तथा मध्यआयु में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। पूजा या ध्यान करने से आपको शान्ति एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होगी तथा जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# पिता, व्यवसाय एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। तुला राशि वायुतत्व युक्त राशि है अतः उसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही इसमें आप समय समय पर परिवर्तन भी करते रहेंगे तथा ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको लाभ भी होगा तथापि अधिक परिवर्तनशीलता की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

आपके लिए आजीविका संबधी क्षेत्र कला संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स, फिल्म निर्देशन, कम्प्यूटर, एयर लाइंस आदि विभाग शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इनमें कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा आपका भविष्य उज्जवल रहेगा। साथ ही उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का भी सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त विभागों में ही कार्य का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सोना, चांदी, हीरा आदि धातु एवं रत्नकार्य, चतुष्पद या वाहन संबधी क्रय विक्रय, सौन्दर्य प्रसाधन एवं आलंकारिक वस्तुओं का व्यापार, रेशमी या मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार या आयात निर्यात, कीमती मदिरा, इलैक्ट्रोनिक्स या कम्प्यूटर कनसलटेंसी एवं फिल्म निर्माण आदि के कार्य में भी आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ भी अर्जित होगा। अतः उपरोक्त वस्तुओं या क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करें।

जीवन में आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में भी आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकते है एवं क्लबों आदि में भी आप आदर की दृष्टि से देखे जाएंगे। अतः अपनी उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता शिक्षित बुद्धिमान प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपने उत्तम कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगे जिससे उन्हें सामाजिक सम्मान की प्राप्ति होगी। आपकी उच्च शिक्षा के प्रति वे पूर्ण जागृत होंगे तथा इसका उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको योग्य व्यक्ति बनाएंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशिष्ट योगदान होगा। आप भी स्वपरिश्रम एवं योग्यता से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# लाभ, मित्र, समाज, ज्येष्ठ भ्राता एवं आकांक्षाएं

आपके जन्म समय में एकादश भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति किसी भी क्षेत्र में अन्त तक संघर्ष करने की रहेगी जब तक की आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति न हो जाये। आप अपनी इसी संघर्षशील प्रवृति तथा पराक्रम से जीवन में अधिकांशरूप से अपनी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे इस प्रकार आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से ही जीवन में उन्नति करेंगे तथा किसी अन्य के सहयोग की अल्पता रहेगी।

आर्थिक क्षेत्र में प्रगति करने के लिए आप सौभाग्यशाली रहेंगे। आप होटल व्यवसाय, सोने सुनारी का व्यवसाय अथवा भाइयों के द्वारा जीवन में लाभ अर्जित कर सकते है। इनसे आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करके धनऐश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे। बड़े भाइयों का आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा तथा जीवन में समय समय पर वे आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे ।

आप पराक्रमी, सक्रिय, बुद्धिमान एवं शिक्षित लोगों को अपना मित्र बनाना पसन्द करेंगे। यद्यपि आपकी प्रवृति स्वच्छन्द रहेंगी तथापि अन्य जनों के साथ मिल कर कार्य करना पसन्द करेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी उच्च रहेगा तथा अपने क्षेत्र या समाज में एक प्रतिष्ठित पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही अन्य जनों की सेवा तथा परोपकार संबंधी कार्यो को सम्पन्न करने में भी तन मन धन से अपना योगदान प्रदान करेंगे। लेकिन मूलतः व्यापारी वर्ग से आपको विशेष सामाजिक संबध बने रहेंगे। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# हानि, बन्धन, कर्ज, आवास परिवर्तन एवं मोक्ष

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में नाम, मान, सम्मान ख्याति तथा धन अर्जित करने के लिए सर्वदा इच्छुक रहेंगे। इसके लिए चाहे आपको कितना ही परिश्रम एवं संघर्ष क्यों न करना पड़े लेकिन आप निरन्तर अपने उद्देश्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर रहेंगे तथा इसमें आप किसी भी अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। आप धन के महत्व को जानेंगे अतः इसका अत्यंत सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक उपयोग करेंगे। साथ ही धन के विषय में आप कोई भी खतरा उठाना पसन्द नहीं करेंगे। अर्जित धन से भविष्य में लाभ किस प्रकार प्राप्त किया जाता है इसको भी आप अच्छी तरह जानते है अतः इसका सदुपयोग किसी आदर्श कार्य या बड़ी कम्पनी में पूंजीनिवेश के रूप में करेंगे साथ ही जायदाद संबंधी क्रय विक्रय पर भी व्यय कर सकते है आपकी प्रवृति धार्मिक होगी। अतः धार्मिक कार्य कलापों दान तथा दीन जनों की भलाई पर भी समय समय पर व्यय होता रहेगा। आप मध्यम अवस्था में धनवान बनेंगे तथा सर्वत्र आपके लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। साथ ही अपनी दानशीलता तथा दयालुता के कारण भी आपको प्रसिद्धि प्राप्त होगी यदा कदा आवास की साज सज्जा तथा अन्य भौतिक उपकरणों पर भी व्यय करेंगे।

आपकी दूर समीप की यात्राएं होती रहेंगी तथा इनमें व्यय के साथ आपको लाभ या सम्मान भी प्राप्त होगा। आप व्यापारिक या अन्य कार्यो से विदेश संबंधी यात्रा भी करेंगे जिससे आपको यथोचित लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार आप सामान्यतया सुखी ही रहेंगे।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# लाल किताब

**बिमारी का बगैर दवाई भी इलाज है, मगर मौत का कोई इलाज नहीं।**
**ज्योतिष दुनियाबी हिसाब–किताब है, कोई दावाऐ खुदाई नहीं।**

Model: C2,Z1Z2Z3,JJL2

SrNo: 101-101-102-1040 / 6604 Date: 29/01/2026

| | | | |
|---|---|---|---|
| लिंग | पुल्लिंग | दादा का नाम | |
| **जन्म तिथि** | **02/02/1975** | पिता का नाम | |
| दिन | रविवार | माता का नाम | |
| **जन्म समय** | **07:15:00 घंटे** | जाति | |
| इष्ट | 00:03:42 घटी | गोत्र | |
| **स्थान** | **Jaipur** | | |
| राज्य | Rajasthan | | |
| देश | India | चैत्रादि संवत शक | 2031 / 1896 |
| अक्षांश | 26:53:00 उत्तर | माह | माघ |
| रेखांश | 75:50:00 पूर्व | पक्ष | कृष्ण |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व | सूर्योदय कालीन तिथि | 7 |
| स्थानिक संस्कार | -00:26:40 घंटे | तिथि समाप्ति काल | 00:14:56 |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे | जन्म तिथि | 7 |
| स्थानिक समय | 06:48:20 घंटे | सूर्योदय कालीन नक्षत्र | चित्रा |
| वेलान्तर | -00:13:43 घंटे | नक्षत्र समाप्ति काल | 11:41:53 घंटे |
| साम्पातिक काल | 15:34:52 घंटे | जन्म नक्षत्र | चित्रा |
| सूर्योदय | 07:13:31 घंटे | सूर्योदय कालीन योग | शूल |
| सूर्यास्त | 18:07:23 घंटे | योग समाप्ति काल | 18:21:55 घंटे |
| दिनमान | 10:53:52 घंटे | जन्म योग | शूल |
| सूर्य स्थिति(अयन) | उत्तरायण | सूर्योदय कालीन करण | विष्टि |
| सूर्य स्थिति(गोल) | दक्षिण | करण समाप्ति काल | 12:48:34 घंटे |
| ऋतु | शिशिर | जन्म करण | विष्टि |
| सूर्य के अंश | 19:04:01 मकर | भयात | 46:14:41 |
| लग्न के अंश | 18:45:42 मकर | भभोग | 57:21:53 |
| | | भोग्य दशा काल | मंग 1 वर्ष 4 मा 2 दि |



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | राशि | अंश | स्थिति | अंधा | सोया | धर्मी | नेक / मन्दा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | मकर | 18:45:42 | ––– | –– | –– | –– | नेक |
| सूर्य | मकर | 19:04:01 | शत्रु राशि | –– | हाँ | –– | नेक |
| चन्द्र | तुला | 04:06:52 | सम राशि | –– | –– | –– | मन्दा |
| मंगल | धनु | 14:46:02 | मित्र राशि | –– | –– | –– | नेक |
| बुध | व कुम्भ | 01:16:56 | सम राशि | –– | –– | –– | नेक |
| गुरु | कुम्भ | 26:03:26 | सम राशि | –– | –– | –– | मन्दा |
| शुक्र | कुम्भ | 10:00:06 | मित्र राशि | –– | –– | –– | मन्दा |
| शनि | व मिथुन | 19:51:29 | मित्र राशि | –– | हाँ | –– | मन्दा |
| राहु | व वृश्चिक | 13:23:04 | शत्रु राशि | –– | –– | –– | मन्दा |
| केतु | व वृष | 13:23:04 | सम राशि | –– | हाँ | –– | नेक |

## भाव स्थिति

| खाना नं. | मालिक | पक्का घर | किस्मत जगानेवाला | सोया | उच्च | नीच |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | मंग | सूर्य | मंग | –– | सूर्य | शनि |
| 2 | शुक्र | गुरु | चंद्र | –– | चंद्र | –– |
| 3 | बुध | मंग | बुध | हाँ | राहु | केतु |
| 4 | चंद्र | चंद्र | चंद्र | हाँ | गुरु | मंग |
| 5 | सूर्य | गुरु | सूर्य | –– | –– | –– |
| 6 | बुध | बुधएकेतु | केतु | –– | बुध,राहु | शुक्र,केतु |
| 7 | शुक्र | शुक्रएबुध | शुक्र | –– | शनि | सूर्य |
| 8 | मंग | मंगएशनि | चंद्र | हाँ | –– | चंद्र |
| 9 | गुरु | गुरु | शनि | –– | केतु | राहु |
| 10 | शनि | शनि | शनि | –– | मंग | गुरु |
| 11 | शनि | शनि | गुरु | –– | –– | –– |
| 12 | गुरु | गुरुएराहु | राहु | –– | शुक्र,केतु | बुध,राहु |

लग्न कुंडली

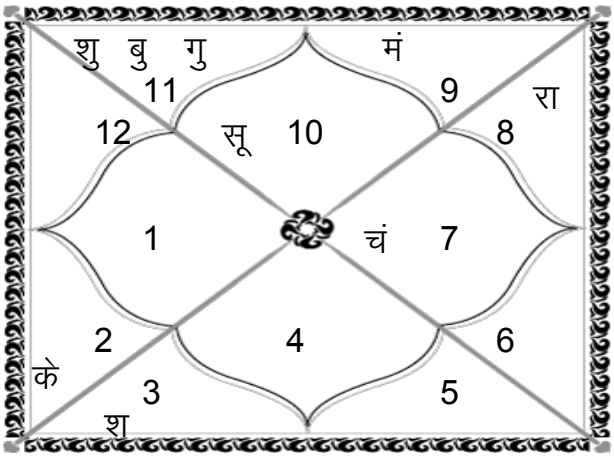


लालकिताब कुंडली

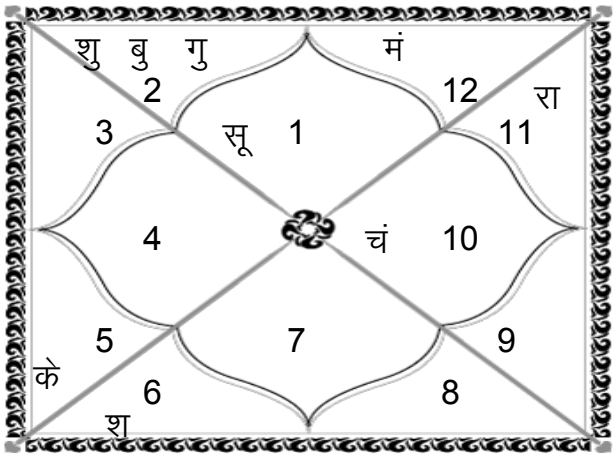




**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

SAMPLE

## मैत्रीचक्र सारिणी

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंग | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ... | मित्र | मित्र | शत्रु | मित्र | सम | सम | सम | शत्रु |
| चंद्र | मित्र | ... | शत्रु | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम |
| मंग | मित्र | मित्र | ... | सम | मित्र | शत्रु | शत्रु | शत्रु | सम |
| बुध | मित्र | सम | शत्रु | ... | शत्रु | मित्र | शत्रु | मित्र | शत्रु |
| गुरु | मित्र | मित्र | मित्र | सम | ... | सम | शत्रु | शत्रु | शत्रु |
| शुक्र | सम | सम | शत्रु | मित्र | शत्रु | ... | मित्र | सम | मित्र |
| शनि | सम | सम | सम | मित्र | शत्रु | मित्र | ... | मित्र | शत्रु |
| राहु | सम | शत्रु | सम | मित्र | शत्रु | सम | मित्र | ... | मित्र |
| केतु | शत्रु | सम | सम | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु | मित्र | ... |

## ग्रह/राशि फल

| ग्रह | वर्णन | फल |
|---|---|---|
| सूर्य | सतयुगी राजा, हाकिम। | –– |
| चंद्र | आक मदार का दूध, जहरीला पानी। | –– |
| मंग | गर्म स्वभाव, मनमर्जी से चलने वाला नेक। | –– |
| बुध | योगी राजा। | –– |
| गुरु | जगतगुरु। | –– |
| शुक्र | मोह माया का उम्दा ग्रहस्थ। | –– |
| शनि | लेख की स्याही एक गुणां मंदा। | राशि |
| राहु | पिता को गोली मारे या मुंह न देखे। | –– |
| केतु | अपनी रोटी के टुकड़े के लिए गुरु का निगरान। | –– |

**चन्द्र कुंडली**

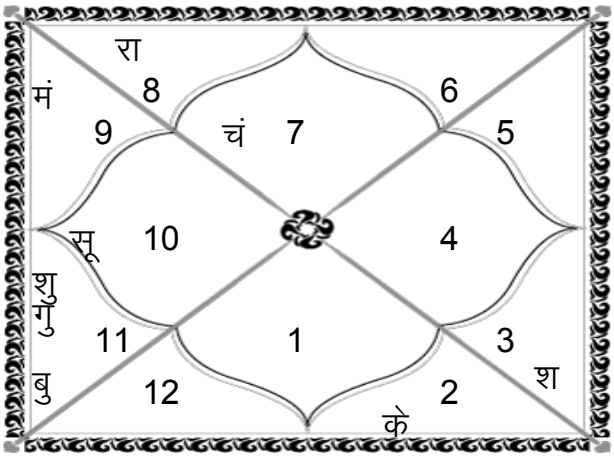


**लालकिताब चन्द्र**

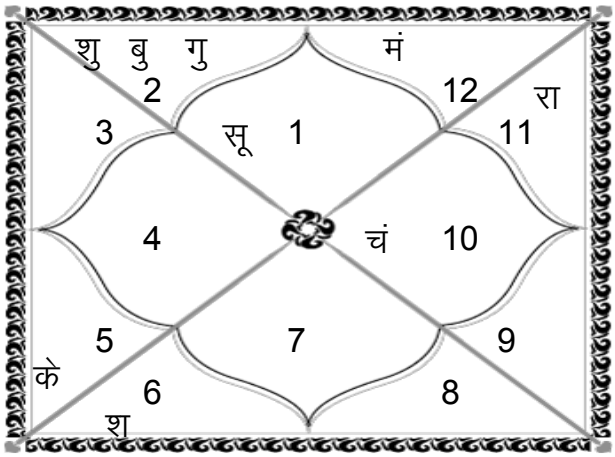




**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# लालकिताब दशा

| शनि | | राहु | | केतु | | गुरु | | सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **02/02/1975** | | **01/02/1981** | | **02/02/1987** | | **02/02/1990** | | **02/02/1996** | |
| **01/02/1981** | | **02/02/1987** | | **02/02/1990** | | **02/02/1996** | | **02/02/1998** | |
| राहु | 01/02/1977 | मंग | 02/02/1983 | शनि | 02/02/1988 | केतु | 02/02/1992 | सूर्य | 03/10/1996 |
| बुध | 02/02/1979 | केतु | 01/02/1985 | राहु | 01/02/1989 | गुरु | 02/02/1994 | चंद्र | 03/06/1997 |
| शनि | 01/02/1981 | राहु | 02/02/1987 | केतु | 02/02/1990 | सूर्य | 02/02/1996 | मंग | 02/02/1998 |

| चन्द्र | | शुक्र | | मंगल | | बुध | | शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **02/02/1998** | | **02/02/1999** | | **02/02/2002** | | **02/02/2008** | | **02/02/2010** | |
| **02/02/1999** | | **02/02/2002** | | **02/02/2008** | | **02/02/2010** | | **02/02/2016** | |
| गुरु | 03/06/1998 | मंग | 02/02/2000 | मंग | 02/02/2004 | चंद्र | 03/10/2008 | राहु | 02/02/2012 |
| सूर्य | 03/10/1998 | शुक्र | 01/02/2001 | शनि | 02/02/2006 | मंग | 03/06/2009 | बुध | 02/02/2014 |
| चंद्र | 02/02/1999 | बुध | 02/02/2002 | शुक्र | 02/02/2008 | गुरु | 02/02/2010 | शनि | 02/02/2016 |

| राहु | | केतु | | गुरु | | सूर्य | | चन्द्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **02/02/2016** | | **02/02/2022** | | **01/02/2025** | | **02/02/2031** | | **01/02/2033** | |
| **02/02/2022** | | **01/02/2025** | | **02/02/2031** | | **01/02/2033** | | **02/02/2034** | |
| मंग | 02/02/2018 | शनि | 02/02/2023 | केतु | 02/02/2027 | सूर्य | 03/10/2031 | गुरु | 03/06/2033 |
| केतु | 02/02/2020 | राहु | 02/02/2024 | गुरु | 01/02/2029 | चंद्र | 03/06/2032 | सूर्य | 03/10/2033 |
| राहु | 02/02/2022 | केतु | 01/02/2025 | सूर्य | 02/02/2031 | मंग | 01/02/2033 | चंद्र | 02/02/2034 |

| शुक्र | | मंगल | | बुध | | शनि | | राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **02/02/2034** | | **01/02/2037** | | **02/02/2043** | | **01/02/2045** | | **02/02/2051** | |
| **01/02/2037** | | **02/02/2043** | | **01/02/2045** | | **02/02/2051** | | **01/02/2057** | |
| मंग | 02/02/2035 | मंग | 02/02/2039 | चंद्र | 03/10/2043 | राहु | 02/02/2047 | मंग | 01/02/2053 |
| शुक्र | 02/02/2036 | शनि | 01/02/2041 | मंग | 03/06/2044 | बुध | 01/02/2049 | केतु | 02/02/2055 |
| बुध | 01/02/2037 | शुक्र | 02/02/2043 | गुरु | 01/02/2045 | शनि | 02/02/2051 | राहु | 01/02/2057 |

| केतु | | गुरु | | सूर्य | | चन्द्र | | शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **01/02/2057** | | **02/02/2060** | | **02/02/2066** | | **02/02/2068** | | **01/02/2069** | |
| **02/02/2060** | | **02/02/2066** | | **02/02/2068** | | **01/02/2069** | | **02/02/2072** | |
| शनि | 02/02/2058 | केतु | 02/02/2062 | सूर्य | 03/10/2066 | गुरु | 03/06/2068 | मंग | 02/02/2070 |
| राहु | 02/02/2059 | गुरु | 02/02/2064 | चंद्र | 04/06/2067 | सूर्य | 03/10/2068 | शुक्र | 02/02/2071 |
| केतु | 02/02/2060 | सूर्य | 02/02/2066 | मंग | 02/02/2068 | चंद्र | 01/02/2069 | बुध | 02/02/2072 |

| मंगल | | बुध | | बुध | | बुध | | बुध | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **02/02/2072** | | **02/02/2078** | | **02/02/2078** | | **02/02/2078** | | **02/02/2078** | |
| **02/02/2078** | | **02/02/2080** | | **02/02/2080** | | **02/02/2080** | | **02/02/2080** | |
| मंग | 02/02/2074 | चंद्र | 03/10/2078 | चंद्र | 03/10/2078 | चंद्र | 03/10/2078 | चंद्र | 03/10/2078 |
| शनि | 02/02/2076 | मंग | 04/06/2079 | मंग | 04/06/2079 | मंग | 04/06/2079 | मंग | 04/06/2079 |
| शुक्र | 02/02/2078 | गुरु | 02/02/2080 | गुरु | 02/02/2080 | गुरु | 02/02/2080 | गुरु | 02/02/2080 |

नोट : 35 साला लाल किताब दशा लगभग तीन चक्र के लिए दी गई है।
उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

## रतांध ग्रह/अंधा टेवा

लाल किताब के अनुसार रतांध ग्रह को नहोराता के ग्रह भी कहते हैं। ये ग्रह दिन में दे खते हैं, परंतु यही ग्रह रात्रि में अंधे हो जाते हैं। ये ग्रह अर्द्ध–अंधे कहे जाते हैं अर्थात् चौथे खाने में सूर्य और सातवें खाने में शनि हो तो वह टेवा आधा अंधा टेवा कहलाएगा।

इस प्रकार का टेवा जातक के व्यावसायिक जीवन में, मन की शांति के लिए और गृहस्थ सुख के लिए काफी हद तक अशुभ असर पड़ता है। सातवें खाने में बैठा शनि बहुत शक्तिशाली हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सप्तम खाने के शनि को दिग्बल प्राप्त हो जाता है। इस भाव का शनि अपनी दसवीं संपूर्ण दृष्टि से सुख स्थान में स्थित सभी ग्रहों को प्रभावित करता है। शत्रु दृष्टि से सूर्य के शुभ फल अशुभता में परिणत हो जाएगा। चतुर्थ स्थान से सूर्य की सप्तम दृष्टि कर्म भाव पर पड़ कर कर्म फल को अशुभ कर देगा। सभी प्रकार की मन की शांति को पूर्ण रूपेण कम कर सभी प्रकार के सुखों को नष्ट कर देगा। कुंडली पर अशुभ प्रभाव देने वाला शनि और उसकी दृष्टि है। अतः सूर्य के उपाय की उपयोगिता नहीं। मात्र शनि की अशुभता नष्ट करने के लिए शनि का उपाय करना चाहिए।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री रतांध ग्रह से प्रभावित नहीं है।

## धर्मी टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ धर्मी टेवा होते हैं। धर्मी टेवा के अशुभ ग्रहों का प्रभाव बहुत हद तक कम हो जाता है। जिस टेवा में बृहस्पति के साथ शनि किसी भी घर में अर्थात् शुभ घर में स्थित हो तो ऐसा टेवा धर्मी टेवा हो जाता है। धर्मी टेवा वाला जातक मुश्किल या कष्ट के समय, जब उसकी सभी राहें अवरुद्ध हो जाती हैं उस समय ईश्वर अपने हाथों से उसकी सहायता करते हैं। शनि ग्रह मुश्किलों का एवं हमारे भाग्य का कारक भी लाल किताब के अनुसार होता है। टेवा में बृहस्पति के साथ अथवा बृहस्पति की राशि में शनि बैठ जाए तो शनि के स्वभाव में शुभता आ जाती है। बृहस्पति और शनि का संबंध बहुत से दोषों को दूर कर देता है। 6ठें, 9वें, 11वें एवं 12वें घरों में शनि बृहस्पति का संयोग होना बड़ी समस्याओं का शमन एवं जीवन के उतार–चढ़ाव को नियंत्रित कर देता है। इसके प्रभाव से (कुंडली) टेवा की अशुभता समाप्त और सारी विपदाओं का अंत हो जाता है।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री धर्मी टेवा नहीं है।

## नाबालिग टेवा

लाल किताब के अनुसार कुछ हालातों में बारह साल की आयु तक कुछ नाबालिग टेवे होते हैं। उस दशा में बारह साल तक के बालक की कुंडली का प्रभाव नहीं उसके पिछले जन्म के भाग्य का असर ही प्रभावी रहता है। नाबालिग टेवा उसको कहते हैं जबकि टेवा 1,4,7 और 10 खाने



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

अर्थात् केंद्र स्थान खाली हो अथवा सिर्फ पापी ग्रह शनि, राहु और केतु ही हो या अकेला बुध ही हो तो वह नाबालिग ग्रहों का टेवा होगा।

उसकी किस्मत का हाल 12 साल तक शक्की होगा।

लाल किताब के अनुसार नाबालिग टेवा वाले जातक पर बारह वर्षों तक प्रत्येक वर्ष एक–एक ग्रह का प्रभाव निम्नरूपेण पड़ा करता है। जीवन पर पड़ने वाले दुषित प्रभाव की अनुकूलता हेतु निम्नांकित भाव स्थित ग्रह का उपाय करना चाहिए।

1. उम्र के पहले साल में सातवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
2. उम्र के दूसरे साल में चौथे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
3. उम्र के तीसरे साल में नौवे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
4. उम्र के चौथे साल में दसवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
5. उम्र के पांचवें साल में ग्यारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
6. उम्र के छठे साल में तीसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
7. उम्र के सातवें साल में दूसरे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
8. उम्र के आठवें साल में पांचवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
9. उम्र के नवमें साल में छठे घर के ग्रह का असर पड़ता है।
10. उम्र के दसवें साल में बारहवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।
11. उम्र के ग्यारहवें साल में पहले घर के ग्रह का असर पड़ता है।
12. उम्र के बारहवें साल में आठवें घर के ग्रह का असर पड़ता है।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री नाबालिग ग्रहों का टेवा नहीं है।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

## स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति–रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

## मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख–दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या



JANMPATRIKA
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी–नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

## पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू–टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने–जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने–बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

## कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन–दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल–ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षांत में घाटा हो जाना आदि।



JANMPATRIKA
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

## निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

## पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

## निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर धन (एक–एक या पांच–पांच या दस–दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

## स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धो खे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

## निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

## निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई का परिवार चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर–बराबर धन लेकर सौ अलग–अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

## आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों–करोड़ों पति कुछ ही समय में



JANMPATRIKA
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी–ठगी–गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा–मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी–व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

## निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा–दादी, माता–पिता, बहन, बेटी–बुआ, भाई, चाचा–ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक–एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

## ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

## निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# लाल किताब ग्रह फल

## सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में सूर्य है। इसकी वजह से बाहर से मधुर स्वभाव परंतु अंदर से आग का शोला होंगे। आपका चाल–चलन अच्छा होगा। आप तेजस्वी, प्रतापी, शत्रुहंता होंगे। आप में आत्मसिद्धि, मानसिक रूप से चिन्तित, मान–सम्मान से युक्त होंगे। सत्ता से लगाव, लेखा–जोखा के कार्य में संलग्न, सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्ति होगी। आप विचारों के पक्के शराब–नशे से दूर रहने वाले, हर बात में पहल करने वाले, आक्रामक, मुंह तोड़ जवाब देने वाले तथा परिश्रमी होंगे। आप पुरुषार्थ से धन कमा कर धनी होंगे। आप दूसरों की सहायता करेंगे। आप ठोकरें खा–खाकर चमकेंगे। आपको सताने वाला नष्ट हो जाएगा। आपकी प्रसिद्धि और बढ़ेगी। धार्मिक कार्य और परोपकार में धन लगाने से उन्नति होगी। 24 वर्ष की आयु में विवाह शुभ, संतान एवं पत्नी का सुख मिलेगा, अच्छे कार्य में अगुवा रहेंगे। गरीबों के मदद्गार एवं क्रोधी होंगे। आप किसी बात को सुन कर फिर देख कर विश्वास करेंगे। सिर गंज पड़े तो धनवान होने का समय आयेगा, आपके स्वतंत्र विचार रहेंगे और यात्रा से लाभ मिलेगा। सरकारी विभाग में उच्चाधिकारी या सरकारी अधिकारियों से अच्छे संबंध होंगे और उनसे लाभ पा सकते हैं। आप जनता के लाभार्थ कार्य करेंगे।

यदि आपने जनता से दुर्व्यवहार किया या परिवार–कल्याण के कामों में विघ्न पैदा किये या मकान के अंत में अंधेरा कमरा रोशनी में बदला तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर शारीरिक व हड्डी रोग, दिल की धड़कन तेज आदि प्रतिकूल फल मिलते हैं। क्रोध करने और दुर्वचन बोलने से रक्तचाप का रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. मांस–मदिरा का प्रयोग न करें।
2. दिन के समय चाल–चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी/कमरा बनायें।

## चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुल की नैया पार लगायेंगे। आपको चीर–फाड़ के या सर्जिकल के सामान से अधिक लाभ होगा। आप चिकित्सक होकर भी डॉक्टर का काम नहीं करें। यदि डाक्टर बन कर डाक्टर का कार्य करते हैं तो अपने पास से दवाई न देवें। आपको माता–पिता का पूरा सुख मिलेगा। आपको मकान और ससुराल वालों से लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा।

यदि आप डाक्टर हैं और अपने पास से रोगी को लिक्विड दवाई दी, समाज विरोधी कार्य



JANMPATRIKA
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

किये, बड़े–बुजुर्गों का अपमान किया, रात के समय अपने मकान की नींव रखी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी प्रेमिका या विधवा स्त्रियों के कारण धन की बर्बादी होगी। आप अपने जीवन में धोखेबाजी और तैरते को पानी में डुबाने वाले होंगे। आपको दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ सकता है। किसी भी औरत के साथ नाजायज संबंध आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आपका मां से अच्छा सलूक नहीं रहेगा। दवाई के व्यापार से हानि होगी। आपको चोर–डाकू, जुआरी एवं शराबी लोगों से नुकसान हो सकता है। नौकरी–व्यापार में बार–बार तबदीली का योग है। आपकी माता को 10 वर्ष बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. चोर–डाकू से संबंध न रखें।
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

उपाय :
1. दूध को फटा कर दूध का पानी पीयें (खराब सेहत के समय)
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

## मंगल

आपकी जन्मकुंडली में बारहवे खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से मंगल का अच्छा फल मिलेगा। आपकी आवाज बुलंद रहेगी। वैसे आप पत्नी, धन–संपत्ति से सुखी रहेंगे। पुत्र के जन्म के बाद आपका भाग्योदय होगा। शत्रु आप से बहुत भयभीत रहेंगे। 24 वर्ष आयु में पुत्र सुख प्राप्त होगा। आपका स्वभाव गर्म रहेगा। आप अपनी मनमर्जी से चलेंगे। आप गरीब से धनवान हो जाएंगे। मुसीबतें टल जाएगी। बीमारी से आपका बचाव होता रहेगा। आपका जन्म बहुत बड़े परिवार में होगा या आपके जन्म के बाद वह परिवार बड़ा हो जाएगा। स्त्री पक्ष से धन लाभ होगा। गुरु और ब्राह्मण की आप सेवा करेंगे। वृद्धों और निर्धनों की सहायता करना आपका स्वभाव रहेगा।

यदि आपने अपने पास हथियार रखा, सुबह उठते ही नमकीन चीजों या नमक का प्रयोग किया, परिवार के लोगों पर जुल्म किया, किसी का अहसान न माना तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके बारे में झूठी अफवाहें फैल सकती हैं। आपकी प्रकृति नीच रहेगी। पत्नी से अच्छा संबंध नहीं रहेगा या पत्नी सुख में न्यूनता आने की आशंका है। आप बुरी संगति से परेशानी में पड़ सकते हैं। अपनी बेवकूफी से अपनी नौकरी–व्यवसाय चौपट कर बैठेंगे। आपको नेत्र रोग हो सकता है। आपकी बांह पर चोट का निशान या विकलांग होने का भय है। नाड़ियों या खून का रोग हो ऐसी आशंका है। आपका धन बेकार के कामों में खर्च नहीं होगा। आपको चोरी और क्षति से सावधान रहना पड़ेगा। आपका बड़ा भाई हो तो वह 28 वर्ष आयु तक जीरो हो जाएगा या आपको उससे भाईपन न रहेगा। बड़ा भाई जीवित है तो कई बार जीवन से तंग होकर आत्महत्या करने का विचार पैदा होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. खुण्डा या जंग लगा हथियार घर पर न रखें।
2. किसी पर भरोसा न रखें।

उपाय :
1. हलुवा या चीनी की रोटी खावें।
2. सुबह उठते ही शहद खावें।

## बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप मेहनत से धन कमा कर, धनी होंगे। आप पत्नी भक्त, स्वार्थी, पुत्र सुख से वंचित तथा संगीत प्रिय हैं। धन–दौलत के मामले में आपका ससुराल पक्ष निर्बल रहेगा। आपके जीवन में राजयोग प्राप्ति के शुभ योग हैं। आपका विचार अस्थिर होता है। आप कुछ देर बाद या बातों–बातों में अपना विचार बदल लिया करते है। आपको कन्या संतान से अधिक सुख प्राप्त होने की संभावना है। आप ज्ञानी और उपदेशक भी हो सकते हैं। आप या आपके पिता दादा बहुत बड़े धनवान होंगे। आप स्वयं अपने भाग्य के निर्माणकर्त्ता हैं। आप स्वाभिमानी, परंतु संतान पक्ष से कमजोर होंगे। आपको राजपक्ष से लाभ होना संभाव्य है। आपकी आय अच्छी होगी। आप अपने जन्म स्थान से दूर निवास करेंगे। आप मतलब परस्त होंगे। आप हाजिर–जबाबी और उपयुक्त उत्तर देने वाले हैं। आप का स्वभाव योगी और राजा दोनों तरह का होगा। आपके संपर्क में जो आएगा वह लाभान्वित होगा।

यदि आपके परिवार में लड़कियां या औरतें अधिक होंगी, दुनियावी साधूओं के चक्कर में रहेंगे, जुआ–सट्टा खेलेंगे तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से पिता–सुख में अल्पता की आशंका है। आप पर लांछन लग सकता है या बदनामी भी हो सकती है। आप मांसाहारी होंगे तो यात्राएं बहुत होंगी। यात्रा से लाभ होने की उम्मीद कम है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. तोता, भेड़–बकरी न पालें।
2. धागा–ताबीज, जल–भभूती आदि से दूर रहें।

उपाय :
1. दूध–चावल धर्म स्थान में देवें।
2. फिटकरी से दांत साफ करें।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

## गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दूसरे खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप गुरु का दायित्व निभाएंगे शिक्षा तथा ज्ञान फैला कर उनकी समस्याओं का हल निकाल लेंगे। आपका गृहस्थ जीवन सुखी होगा। दौलत बहुत आ जाएगी। सरकारी कामकाज के अवसर मिलेंगे। आप अपनी जायदाद खुद बनाएंगे। आपके पिता के आशीर्वाद से आपकी दौलत में वृद्धि होगी। अगर आप सरकारी नौकरी करते हैं तो 27वें साल में सरकारी नौकरी में तरक्की होगी। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आप में हुकूमत करने की ताकत होगी और जीवन की हर मंजिल पर फतह पाएगें। आपका कुछ बुरा होने वाला होगा उसके पहले आपको पता चल जाएगा। आपको अचानक दबा धन मिलने की संभावना है। आपको विद्या का बहुत लाभ मिलेगा। आपकी पत्नी सुंदर होगी। आप जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आप बहादुर होंगे। खेती–बाड़ी या मिट्टी से संबंधित कामों में या कपड़े से संबंधित नौकरी–व्यापार में अच्छा लाभ होगा।

यदि आपने पत्नी का विरोध किया, सर्राफी–जौहरी का काम किया, माता–पिता का विरोध किया या माता–पिता को कष्ट दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपकी नजर पर बुरा प्रभाव पड़ने की शंका है। बुढ़ापे में स्वास्थ्य और आर्थिक हालत अच्छी नहीं रहेंगे। आपको दूसरे के झगड़े में पड़ने से नुकसान उठाना पड़ेगा। आप कुछ दुःखी रहेंगे ऐसी आशंका है। आप में बेरहमी भी होगी। पुलिस/कोर्ट से दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. सर्राफी/जौहरी के काम न करें।
2. चाल–चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. मकान में कच्चा हिस्सा जरुर रखें।
2. केसर/हल्दी का तिलक करें।

## शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से जीवन भर धन–संपत्ति, संतान सुख में वृद्धि होगी। आपको सभी पक्ष से शुभ फल प्राप्त होंगे। आप बहुत परिश्रमी होंगे। आपको भाई का सुख प्राप्त होगा। नौकरी–व्यापार ठीक से चलते रहेंगे। दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की होती रहेगी। आप सम्मानीय व्यक्ति होंगे। आप ईश्वर पर विश्वास करें तो आपकी सभी कामनाएं पूरी होंगी। पत्नी का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आपके जीवन के साठ साल की उम्र तक खूब आमदनी होगी। आप साधू–संतों की वेशभूषा पहन कर आशिकाना ख्याल के मालिक होंगे। चारित्रिक



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

सुधार के बावजूद आपका जीवन सफल रहेगा। आपके शत्रु आप से दबे रहेंगे। आपके भाई तथा लड़के की किस्मत अच्छी होगी। आपको दुनियाबी सहायता मिलेगी। आप प्रेम संबंध बड़ी होशियारी से करेंगे। आप कामयाब आशिक होंगे।

यदि आपने शेरमुख घर में रिहाईश की, राग–रंग से नफरत रखी, आलू का व्यापार किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से घर में बीमारी लगी होगी। रक्तदोष एवं शुक्राणु दोष के कारण औलाद की पैदाइश में रुकावट हो सकती है। संतान जन्म में बाधा की आशंका हो तो (किसी वैद्य/हकीम की सलाह लेकर आयुर्वेद दवाईयों का प्रयोग करें)। आप किसी के साथ बुराई करें तो आत्मघात जैसा फल मिलेगा। दूसरे के बच्चे को गोद लेने पर अपनी संतान बाधा दूर हो जाएगी। बुराई करने पर आपके बच्चों पर गलत प्रभाव पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. पघुओं पर जुल्म न करें।
2. घेर मुख घर में रिहाइघ न करें।

उपाय :
1. आलू, घी या दही का दान करें।
2. बिना सींग की गाय की सेवा करें।

## शनि

आपकी जन्मकुंडली के छठे खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आपको 28 वर्ष की उम्र में या 28 वर्ष की आयु के बाद विवाह लाभदायक होगा अन्यथा मां, पत्नी, संतान पर मंदा असर रहेगा। आप खेल में रुचि रखने वाले या प्रसिद्ध खिलाड़ी भी हो सकते हैं। आपकी पत्नी सुखी रहेगी। आपकी उम्र के 34 से 41 वर्ष के बीच कोई संतान पैदा हो तो आपके जीवन और घर का कायाकल्प हो सकता है। आपको यात्रा से लाभ मिलेगा। आपका चरित्र उत्तम होगा। आपका परिवार सुखी रहेगा। धन–लक्ष्मी की प्राप्ति होती रहेगी। आप गुप्त कार्य करने के आदी हो सकते हैं। संतान आपके भाग्य के लिए बड़ी ही शुभ और अनुकूल होगी।

यदि आपका घर बंद गली में हुआ, धर्म मंदिर से जूता बदला, पूर्णिमा को नया काम शुरु किया, चमड़े–लोहे का सामान मुफ्त लिया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपका छोटा भाई आप से शत्रुता करे, ऐसी शंका है। परंतु अंत में वह दुश्मनी को भुला कर दोस्त बन जाएगा। शराब–मांस, अंडे का भोजन करने से हानि होने की आशंका है। आप लड़ाई–झगड़े से परेशानी में पड़ सकते हैं। आपके ताऊ, बड़े भाई या मामा को नेत्र रोग या आंखों की हानि हो सकती है। आपकी पत्नी और माता को कोई कष्ट होने की



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

आशंका है। शराब–कबाब और औरतों के चक्कर में मुकद्दमा/पुलिस या साहूकारी अड़चने आ सकती हैं। आपको गुर्दे या पथरी के रोग का भी भय है। आपकी मृत्यु दुर्घटना से हो सकती है। आपकी नौकरी व्यापार में अचानक बाधाएं आ सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. धर्म स्थान से जूता चोरी न हो इसका विघेष ध्यान रखें।
2. लोहे का नया सामान न खरीदें।

उपाय :
1. काले कुत्ते की सेवा करें।
2. सांप को दूध पिलावें।

## राहु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका बचपन खुशहाली से बीतेगा। आपको उच्च शैक्षणिक संस्थान में विद्याध्ययन का मौका मिलेगा। आपको पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप बिना माता–पिता के सहयोग के भी आगे बढ़तें रहेंगे। आप ताकतवर और न्यायप्रिय होंगे। आप अपनी कमाई पर ही जीवन बसर करेंगे। माता–पिता से मधुर संबंध में कटुता की संभावना है। विदेशी यात्रा या कार्यों द्वारा धन भी प्राप्त होगा। दूसरो पर भरोसा रखने से विश्वासघात होगा ऐसी शंका है।

यदि आपने बंदूक–पिस्तौल रखी, नीलम या नीला नग पहना, बिजली का खराब सामान या बिजली की तारें घर में पड़ी होगी, दराज या कैश बॉक्स खाली रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके पिता को कष्ट होने की आशंका है। आपकी साढ़े दस–21–42 वर्ष आयु में पिता की मृत्यु होगी। पिता की मृत्यु गोली, जहर, ब्रेन हैमरेज से संभाव्य है। पिता की मौत के बाद बहुत क्षति होगी। आप ऐय्याश लोगों की संगति में रहेंगे, ऐसी आशंका है। अनुचित ढंग से धन कमाएंगे। आपकी परेशानी धातु संबंधी रोगों से बढ़ सकती है। आपकी संतान कमजोर और अपाहिज हो सकती है। आपकी जवानी गरीबी में कटेगी। पिता और दादा से नहीं पटेगी। आपके जन्म के पश्चात् आपके पिता की आर्थिक दशा तंग होने की संभावना है। आप काम में दक्ष होंगे और धूर्त लोग आपके साथ होंगे। फिजूल के झगड़े–फसाद होने की आशंका है। धन की हानि भी होती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. नीलम या नीला नग न पहनें।
2. घर में बंदूक/पिस्तौल न रखें।

3. बिजली का सामान ठीक रखें।

उपाय :
1. सिर पर चोटी रखें या सिर ढांप कर रखें।
2. 4 किलो सिक्के का चौरस टुकड़ा 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।
3. सिगरेट पीते हैं तो चांदी की पाइप में लगा कर पियें।

## केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पांचवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति होगी। आपको विलक्षण अतिद्रिय शक्ति प्राप्त होगी। आप गुरु भक्त रहेंगे। 24 वर्ष की उम्र के बाद आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। जीवन में 34 वर्ष आयु में पुत्र द्व ारा, उसके पश्चात पौत्र द्वारा सुख प्राप्त होगा। 48 वर्ष की उम्र तक माता का सुख मिलेगा। पत्नी के साथ अच्छा संबंध रहेगा। आपके धर्म–ईमान के अनुसार ही आपकी संतान होगी। आप अपना चाल–चलन ठीक रख कर सुखी रह सकते हैं। आपकी आर्थिक हालत ठीक रहेगी। इच्छित संख्या के अनुसार संतान होगी। पुत्र संतान उत्पत्ति के पश्चात् आपकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। यदि आप धर्माचरण करते रहें तो जीवन के अशुभ फल दूर हो जाएंगे।

यदि आपने चाल–चलन खराब किया, किसी के पुत्र को या अपने पुत्र को कष्ट दिया कुत्ते को मारा या मरवाया या कुत्ता आपके वाहन से टकरा कर मर गया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 45 वर्ष तक आयु का समय बेकार रहेगा। पुत्र से कोई खास सुख प्राप्त नहीं होगा। संतान को कष्ट रहेगा। आपको श्वास संबंधी या दमे के रोग की आशंका है। 48 वर्ष की आयु का समय भी ठीक नहीं रहेगा। सुख में कमी और बाधा उत्पन्न हो सकती है। आयु बढ़ने के साथ आप बुरे लोगों की संगति में रहेंगे। गुप्त रोग का भय, संतान को दमा रोग रहने की संभावना रहेगी। आपका पुत्र आपकी माता के लिए अशुभ रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दुश्चरित्र लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक में ताला लगाकर बंद न रखें। उन्हें कभी–कभी खोलते रहें।

उपाय :
1. गुरु–पिता दादा की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com

# लाल किताब के उपाय

## कब और कैसे करें ?

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है ।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई–बहन, माता–पिता, दादा–दादी, पुत्र–पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस–मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल–चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री–परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग–बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40–43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति –रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।



**JANMPATRIKA**
72, JLN MARG, JAIPUR
0141-2566012 / 8619459518
www.janmpatrika.com astrojayant@gmail.com